रांची से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

अलग पहचान

सत्य की उड़ान

रांची, शुक्रवार 06 दिसंबर 2024, वर्ष 10, अंक 324 पृष्ठ 8, मूल्य 5/ रुपया

alagpahchan@gmail.com www.alagpahchan.com

झारखंड कैबिनेट विस्तार: 11 मंत्रियों ने ली शपथ, हेमंत सोरेन सरकार में शामिल हुए 6 नए चेहरे

झारखंड में हेमंत सोरेन सरकार का कैबिनेट विस्तार हुआ, जिसमें 11 मंत्रियों ने शपथ ली। राज्यपाल ने राजभवन में आयोजित समारोह में नवनियुक्त मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। कैबिनेट में झामुमो से 6, कांग्रेस से 4 और राजद से 1 मंत्री शामिल हैं। स्टीफन मरांडी ने प्रोटेम स्पीकर के रूप में शपथ ली।

- **प्रोटेम स्पीकर के रूप में स्टीफन मरांडी ने शपथ ली**
- **संताल परगना से सबसे अधिक 4 मंत्री बनाए गए**
- **माले ने कैबिनेट से बाहर रहने का लिया फैसला**

रांचीः झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार का गुरुवार को कैबिनेट विस्तार हुआ जिसमें 11 मंत्रियों ने शपथ ली। राज्यपाल संतोष गंगवार ने राजभवन में आयोजित समारोह में सभी नवनियुक्त मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इन मंत्रियों में झारखंड मुक्ति मोर्चा से दीपक बिरुआ, रामदास सोरेन, हफीजुल हसन, सुदिव्य कुमार सोनू, योगेंद्र महतो और चमरा लिंडा शामिल हैं। कांग्रेस से दीपिका पांडेय सिंह, इरफान अंसारी, राधाकृष्ण किशोर और शिल्पी नेहा तिर्की को मंत्री बनाया गया है जबकि राष्ट्रीय जनता दल से संजय प्रसाद यादव को कैबिनेट में जगह दी गई है। **प्रोटेम स्पीकर के रूप में स्टीफन मरांडी ने शपथ ली** इन मंत्रियों से पहले राज्यपाल ने झामुमो के वरिष्ठ विधायक स्टीफन मरांडी को विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर के तौर पर शपथ दिलाई गई। राजभवन के अशोक उद्यान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में सीएम हेमंत सोरेन, कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर, राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव जयप्रकाश नारायण यादव सहित कई महत्वपूर्ण लोग उपस्थित रहे। **हेमंत कैबिनेट में 5 पुराने चहरे** नवगठित कैबिनेट में छह नए और पांच पुराने चेहरे हैं। नए मंत्रियों में राधाकृष्ण किशोर, सुदिव्य सोनू, चमरा लिंडा, योगेंद्र प्रसाद, शिल्पी नेहा तिर्की और संजय यादव शामिल हैं। हालांकि राधाकृष्ण किशोर पहले बीजेपी की सरकार में कुछ दिनों के लिए मंत्री रह चुके हैं। सत्तारूढ़ गठबंधन में इस बार आठ महिलाएं चुनाव जीतकर विधानसभा पहुंची हैं। इनमें से दो को कैबिनेट में जगह मिली है। कैबिनेट में राज्य के पांचों प्रमंडलों को प्रतिनिधित्व दिया गया है। **संताल परगना से सबसे अधिक 4 मंत्री बनाए गए** संताल परगना से सर्वाधिक चार मंत्री बनाए गए हैं। कोल्हान, दक्षिणी छोटानागपुर और उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल से दो-दो और पलामू प्रमंडल से एक विधायक को मंत्रिमंडल में जगह मिली है। सरकार ने मंत्रिमंडल में विभिन्न समुदायों को प्रतिनिधित्व देकर सामाजिक-राजनीतिक समीकरणों को साधने का प्रयास किया है। अनुसूचित जनजाति से चार, अनुसूचित जाति से एक, ओबीसी से तीन, अल्पसंख्यक समुदाय से दो और सवर्ण समुदाय से एक विधायक को प्रतिनिधित्व दिया गया है। **भाकपा-माले ने कैबिनेट से बाहर रहने का लिया फैसल** भाकपा माले ने मंत्रिमंडल से बाहर रहने का फैसला किया था। हेमंत सोरेन की पिछली सरकार के सात मंत्री इस बार कैबिनेट में नहीं दिखेंगे। पूर्व की सरकारों में सबसे बुजुर्ग मंत्री रहे रामेश्वर उरांव को इस बार जगह नहीं मिल पाई। चार पूर्व मंत्री बेबी देवी, बन्ना गुप्ता, मिथिलेश ठाकुर और बैद्यनाथ राम चुनाव हार गए। जबकि सत्यानंद भोक्ता इस बार चुनाव नहीं लड़ पाए। वहीं चंपाई सोरेन पहले ही सत्तारूढ़ गठबंधन को अलविदा कहकर भाजपा में शामिल हो गए थे।

इंडिया गठबंधन को 81 में से 56 सीटें मिली हेमंत सोरेन ने 28 नवंबर को मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी। झारखंड की 81 सदस्यीय विधानसभा में सोरेन के नेतृत्व वाले चार दलों के गठबंधन ने 56 सीटों पर जीत हासिल की थी। झारखंड मुक्ति मोर्चा को 34, कांग्रेस को 16, राजद को चार और भाकपा (माले) को दो सीटें मिली थीं।

दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस बने सुप्रीम कोर्ट के जज, CJI खन्ना ने दिलाई शपथ

न्यायमूर्ति मनमोहन की नियुक्ति के साथ, सर्वोच्च न्यायालय की कार्यात्मक शक्ति अब 34 की स्वीकृत शक्ति के मुकाबले 33 न्यायाधीशों तक बढ़ गई है। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 28 नवंबर को न्यायमूर्ति मनमोहन को शीर्ष अदालत में पदोन्नत करने की सिफारिश की थी।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 28 नवंबर को न्यायमूर्ति मनमोहन को शीर्ष अदालत में पदोन्नत करने की सिफारिश की थी। भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बीआर गवई, सूर्यकांत, हृषिकेश रॉय और अभय एस ओका के कॉलेजियम ने बैठक में निर्णय लिया। दिल्ली हाई कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मनमोहन ने सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। भारत के मुख्य न्यायाधीश, संजीव खन्ना ने न्यायमूर्ति मनमोहन को पद की शपथ दिलाई। न्यायमूर्ति मनमोहन की नियुक्ति के साथ, सर्वोच्च न्यायालय की कार्यात्मक शक्ति अब 34 की स्वीकृत शक्ति के मुकाबले 33 न्यायाधीशों तक बढ़ गई है। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 28 नवंबर को न्यायमूर्ति मनमोहन को शीर्ष अदालत में पदोन्नत करने की सिफारिश की थी। भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति बीआर गवई, सूर्यकांत, हृषिकेश रॉय और अभय एस ओका के कॉलेजियम ने बैठक में निर्णय लिया।

क्या मथुरा-काशी के मंदिरों से भी हटेंगे मस्जिद, पूजा स्थल कानून पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला बनेगा नजीर?

नई दिल्लीः *उत्तर प्रदेश में संभल की मस्जिद के बाद देशभर में उठे ऐसे कई विवादों को लेकर 1991 का पूजा स्थल कानून घेरे में आ गया है। इस कानून को लेकर 6 याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की गई हैं। इस कानून की वैधता को लेकर दायर याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस संजीव खन्ना की अगुवाई वाली पीठ सुनवाई करेगी। ये समझते हैं कि पूजा स्थल कानून-1991 क्या है? इसने किसने और क्यों लागू किया था? कुछ समुदाय इसे पूरी तरह से लागू किए जाने तो कुछ समुदाय इस कानून को रद्द किए जाने के पक्ष में क्यों हैं? क्या सुप्रीम कोर्ट के फैसले से मथुरा और काशी के मंदिरों से मस्जिदें हटा दी जाएंगी? इसे समझते हैं।* ***पूजा स्थल कानून-1991 क्या है, अयोध्या मसला इसके दायरे में क्यों नहीं था*** *1991 की बात है, जब देश में प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की कांग्रेस सरकार थी। कांग्रेस सरकार प्लेसेज ऑफ वर्शिप एक्ट, 1991 लेकर आई, जिसे पूजा स्थल कानून भी कहते हैं। इस कानून के मुताबिक, 15 अगस्त 1947 से पहले अस्तित्व में आए किसी भी धर्म के पूजा स्थल को किसी दूसरे धर्म के पूजा स्थल में नहीं बदला जा सकता। अगर कोई ऐसा करने की कोशिश करता है तो उसे एक से तीन साल तक की जेल और जुर्माना हो सकता है। अयोध्या का मामला उस वक्त कोर्ट में था इसलिए उसे इस कानून से अलग रखा गया था। संभल के अलावा मुगलों-तुर्कों की बनाई इन 10 मस्जिदों के मंदिर होने का है दावा, कांग्रेस सरकार का कानून क्यों चाहती है जमीयत क्या राममंदिर आंदोलन रोकने के लिए कांग्रेस लाई थी यह कानून 1991 में राम मंदिर आंदोलन अपने चरम पर था। भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने 25 सितंबर 1990 को सोमनाथ से रथयात्रा निकाली।*

क्या पूजा स्थल कानून 1991 की धारा 2, 3 और 4 संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और समानता की गारंटी का हनन है? क्या इस कानून की धारा 2, 3 और 4 अनुच्छेद 25, 26 और 29 और संविधान में धर्मनिरपेक्षता की मूल विशेषता का उल्लंघन करती हैं? क्या आक्रमणकारियों के नष्ट किए गए मंदिर हिंदू और इस्लामी पर्सनल लॉ के तहत मंदिर बने रहेंगे? ये कुछ सवाल है, जिन पर सुप्रीम कोर्ट की CJI की पीठ सुनवाई करेगी। क्या है यह कानून और इसकी वैधानिकता पर सुप्रीम कोर्ट क्यों विचार कर रहा है, इसे समझते हैं।

संसद सत्र, 8वां दिन- विपक्षी सांसद काली जैकेट पहनकर पहुंचेः मोदी-अडाणी पर नारेबाजी की, राहुल बोले- अडाणी की जांच नहीं करा सकते मोदी

नई दिल्ली संसद परिसर में 5 दिसंबर को विपक्षी सांसदों ने पीएम मोदी और अडाणी को लेकर नारेबाजी की। संसद के शीतकालीन सत्र का गुरुवार को आठवां दिन है। विपक्षी सांसद काली जैकेट पहनकर संसद पहुंचे और गली-गली में शोर है, मोदी-अडाणी चोर हैं के नारे लगाए। संसद की पिछली 7 कार्यवाहियों में संभल हिंसा, मणिपुर हिंसा, किसानों की मांग का मुद्दा और अडाणी मामला सबसे ज्यादा चर्चा में रहा। विपक्षी सांसदों के साथ राहुल और प्रियंका गांधी भी शामिल हुए। विपक्षी सांसदों ने नारेबाजी करते हुए ये भी कहा- 'स्कूल देखो- अडाणी', 'सड़कें देखो- अडाणी', 'ऊपर देखो- अडाणी, नीचे देखो- अडाणी' के नारे लगाए। राहुल गांधी ने प्रदर्शन के दौरान कहा- आप (सरकार) कभी इन्वेस्टीगेशन कराओगे? आप करा सकते हो अपना ही इन्वेस्टीगेशन? मोदी जी, अडाणी जी की जांच नहीं करा सकते। क्योंकि मोदी, अडाणी की जांच कराएंगे तो अपनी ही जांच कराएंगे। मोदी और अडाणी दो नहीं, एक हैं। विपक्षी सांसदों ने संसद परिसर में मोदी-अडाणी को लेकर नारेबाजी की। राहुल-प्रियंका भी प्रदर्शन में शामिल रहे। राहुल गांधी ने फिर कहा कि मोदी-अडाणी दो नहीं, एक हैं। विपक्षी सांसदों के प्रदर्शन में प्रियंका गांधी भी शामिल हुईं। तरुण गोगोई समेत कांग्रेस सांसदों ने 'सदन में आओ', 'जवाब दो' के नारे लगाए। विपक्षी सांसदों के प्रदर्शन में प्रियंका गांधी भी शामिल हुईं। तरुण गोगोई समेत कांग्रेस सांसदों ने 'सदन में आओ', 'जवाब दो' के नारे लगाए।

'संसद सत्र के समय ही होती है देश की छवि बिगाड़ने की कोशिश', सुधांशु त्रिवेदी ने लगाए गंभीर आरोप

नई दिल्ली सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि जब भी भारत की संसद का सत्र चल रहा होता है, तभी विदेशों में कोई न कोई ऐसी रिपोर्ट सामने आती है, जिससे देश की छवि खराब होती है। भाजपा सांसद ने भारत को अस्थिर करने के लिए विदेशी हस्तक्षेप का भी आरोप लगाया। फ्रांस के एक प्रकाशन ने हाल ही में प्रकाशित ओसीसीआरपी (ऑर्गेनाइज्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट) की रिपोर्ट को लेकर एक खबर बनाई है, जिसमें दावा किया गया है कि ओसीसीआरपी की रिपोर्ट तटस्थ नहीं है और इसे अमेरिकी कारोबारी जॉर्ज सोरोस की फंडिंग मिलती है। फ्रांस के अखबार की इस रिपोर्ट के आधार पर भाजपा ने विपक्ष को घेर लिया है और विपक्ष पर विदेशी हस्तक्षेप को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। भाजपा सांसद संबित पात्रा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इस मुद्दे पर राहुल गांधी और पूरे विपक्ष पर गंभीर आरोप लगाए।

Places Of Worship Act की सुनवाई को लेकर बोले विष्णु शंकर जैन, कट-ऑफ तारीख है असंवैधानिक

संसद के पास ऐसा कानून बनाने की विधायी क्षमता नहीं है जो लोगों से अदालत जाने का अधिकार छीन सके। यह अधिनियम संविधान की मूल संरचना और अनुच्छेद 14, 15, 19, 21 और 25... का उल्लंघन है। 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की कांग्रेस सरकार यह कानून लेकर आई थी, जिसे संसद से पास भी कराया गया। पूजा स्थल अधिनियम की सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई पर वकील विष्णु शंकर जैन ने कहा कि हमने पूजा स्थल अधिनियम 1991 की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी है। हमारा कहना है कि जमीयत-उलेमा-ए-हिंद ने पूजा स्थल अधिनियम की जो व्याख्या दी है। आप राम मंदिर के अलावा किसी अन्य मामले के लिए अदालत नहीं जा सकते, यह असंवैधानिक है। दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूजा स्थल अधिनियम में कट-ऑफ तारीख 15 अगस्त 1947 है। कट-ऑफ तारीख 712 ई. होनी चाहिए जब मोहम्मद बिन कासिम ने यहां पहला हमला किया और मंदिरों को ध्वस्त कर दिया। यह कट-ऑफ तारीख असंवैधानिक है। संसद के पास ऐसा कानून बनाने की विधायी क्षमता नहीं है जो लोगों से अदालत जाने का अधिकार छीन सके। यह अधिनियम संविधान की मूल संरचना और अनुच्छेद 14, 15, 19, 21 और 25... का उल्लंघन है। 1991 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव की कांग्रेस सरकार यह कानून लेकर आई थी, जिसे संसद से पास भी कराया गया। यह कानून 15 अगस्त, 1947 यानी देश की आजादी से पहले अस्तित्व में किसी भी धार्मिक पूजा स्थल की यथास्थिति बरकरार रखने की शक्ति देता है, साथ ही पूजा स्थलों को दूसरे धर्म के पूजा स्थल में बदलने से रोकता है। अगर ऐसा कोई करता है तो उसे एक से तीन साल की सजा और जुर्माना हो सकता है। इस एक्ट में कुद महत्वपूर्ण धाराओं को शामिल किया गया है।

बंगाल के हिंदुओं, सिखों, जैन और सभी सनातन धर्म के लोगों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ निकाली गई आक्रोश रैली

बंगाल में हिंदुओं, सिखों, जैन धर्म के लोगों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ में आक्रोश रैली निकाला गया। जिसमें सभी सनातन धर्म के लोगों एवं संगठनों ने भाग लिया।

जिसमें अखिल भारतीय पूर्व सैनिक रांची जिला के अध्यक्ष सुबेदार मेजर नारायण प्रसाद की अध्यक्षता में संगठन के लोगों ने भी भाग लिया। सुबे. अरुण झा,सुबे. राकेश सिंह, सुबे. एम के राय, सुबे. मनोज सिंह,अक्षय मिश्रा,सुबे राममंगल सिंह, अरूण तिवारी एवं अन्य लोगों भी थे। आक्रोश रैली 11 बजे मोराबादी बापु वाटिका से शुरू हुआ और डीसी कार्यालय के पास समाप्त हुआ।इस रैली में मातृशक्ती भी काफी संख्या में भाग लिया। इसके पश्चात जिला समाहर्ता के द्वारा महामहिम श्रीमती द्रोपदी मुर्मू जी को ज्ञापन भेजा गया। .

विश्व हिन्दू परिषद ने बांग्लादेश में साधु संत और सनातन समाज के लोगों पर हो रहे अत्याचार का किया कड़ा विरोध दर्ज

जमशेदपुर के सर्व सनातन समाज से कई सामाजिक संगठन, धार्मिक संगठन, हिंदू संगठन और साधू संत समाज, इस्कॉन, भारत सेवा आश्रम संघ, बौद्ध समाज, जैन समाज, मराठी समाज, जायसवाल समाज व अन्य संगठन के लोग विश्व हिन्दू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ हजारों की संख्या मे साकची आमबगान से उपायुक्त कार्यलय तक शांतिपूर्ण तरीके से पद यात्रा कर बांग्लादेश मे हिंदूओं के नरसंहार, हिंदू बहन बेटियों के बलात्कार, हिंदू मंदिर की तोड फोड और हिंदू धर्म गुरुओं की गिरफ्तारी विशेषकर बांग्लादेश इस्कॉन के प्रमुख चिनमय दास को देशद्रोह के नाम पर अवैध गिरफ्तारी करना और अदालत मे किसी वकील को भी उसके समर्थन करने से हत्या करने की सामूहिक धमकी देना जैसे अमानवीय घटनाक्रम नित्य सत्ता परिवर्तन के बाद चल रहा है, जो कि 1947 मे आजादी के समय देश बंटवारे के समय पाकिस्तान वाले भाग मे स्थित हिंदूओं के साथ और 1971 मे पूर्वी पाकिस्तान मे रह रहे हिंदूओं के नरसंहार की घटना को दोहराने की तरह है , इसे भारत के हिंदू कतई बर्दाश्त करने को तैयार है और दिन पर दिन बांग्लादेश के हिंदूओं के रक्षा हेतू उनके समर्थन मे जनाक्रोश बढता जा रहा है, कि भारत सरकार शीघ्र ही बांग्लादेश की सरकार और वहां के कट्टरपंथी जिहादियों के विरोध कठोर कार्रवाई कर हिंदूओं की रक्षा सुनिश्चित करे इसके लिए युद्ध भी करना पडे तो संपूर्ण हिंदू समाज भारत सरकार के समर्थन मे एकजुट खडा रहेगी , उपायुक्त महोदय के माध्यम से दर्जनों संगठनो ने महामहिम राष्ट्रपति महोदया के नाम पर इस विषय को लेकर ज्ञापन सौंपा इस मौके पर विहिप के प्रांत, विभाग, जिला, प्रखंड और खंड के सैकडों सदस्यगण उपस्थित रहे ।

200 बिस्तरों वाले सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के लिए सीसीएल ने किया समझौता ज्ञापन

रांचीः झारखंड की जनता को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल) ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। कांके , रांची में 200 बिस्तरों वाले सुपर स्पेशलिटी (कार्डियोलॉजी, पल्मोनोलॉजी और न्यूरोलॉजी) अस्पताल की स्थापना के लिए सीसीएल, बाबासाहेब अंबेडकर वैद्यकीय प्रतिष्ठान (बीएवीपी) और धन्वंतरी आरोग्य सेवा संस्थान (डीएएसएस) के बीच त्रिपक्षीय समझौता किया । यह समझौता सीसीएल मुख्यालय, दरभंगा हाउस, रांची में आयोजित एक समारोह में संपन्न हुआ। सीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक निलेन्दु कुमार सिंह की गरिमामयी उपस्थिती में यह महत्वपूर्ण समझौता हुआ। 200 बिस्तरों की क्षमता वाला अत्याधुनिक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल होगा। इसमें कार्डियोलॉजी, पल्मोनोलॉजी और न्यूरोलॉजी में विशेषज्ञ सेवाएं किफायती दरों पर जनता के लिए सुलभ चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध रहेगा।

यह पहल सीसीएल के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक (सीएमडी) निलेन्दु कुमार सिंह के दूरदर्शी और प्रेरक नेतृत्व का परिणाम है। श्री सिंह के मार्गदर्शन में सीसीएल ने न केवल कोयला खनन क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की है, बल्कि समाज के समग्र विकास और कल्याण में भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है। श्री सिंह ने इस अवसर पर कहा, "सीसीएल का उद्देश्य सिर्फ कोयला उत्पादन नहीं है, बल्कि लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना भी हमारी प्राथमिकता है। यह सुपर स्पेशलिटी अस्पताल इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगा।"

उन्होंने आगे कहा कि यह परियोजना झारखंड के हर वर्ग को सुलभ और किफायती स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करेगी। श्री सिंह ने सीसीएल के कर्मचारियों और हितधारकों का आभार व्यक्त करते हुए इसे सामूहिक प्रयास और समर्पण का परिणाम बताया।

इस अवसर पर सीसीएल के निदेशक (वित्त) पवन कुमार मिश्रा, निदेशक (कार्मिक) हर्ष नाथ मिश्र, बीएवीपी और डीएएसएस के वरिष्ठ प्रतिनिधि, और सेवांकुर भारत की टीम के डॉक्टर आदि उपस्थित थे। इस अवसर विशेष पर एसी मोहंता, डॉ. रत्नेश जैन, आरआर सिंह, पीके साहू और अमित प्रकाश एवं अन्य उपस्थित थे।

राजस्व वृद्धि को लेकर संसाधनों को चिन्हित करें नगर निकाय

रांचीः राज्य के हर नागरिक को जरुरी और उच्च गुणवतायुक्त नागरिक सुविधा मिले इसको लेकर राज्य सरकार और मुख्यमंत्री बेहद संवेदनशील है । इसी क्रम में राज्य सरकार के नगर विकास एवं आवास विभाग के प्रधान सचिव सुनील कुमार नें नगर निकायों के राजस्व संग्रहण की समीक्षा की और राजस्व संवर्द्धन को लेकर कई आवश्यक निर्देश दिया । नगर विकास एवं आवास विभाग के अधिकारियों के साथ बैठककर प्रधान सचिव नें निर्देश दिया है कि नगर पालिका अधिनियम के तहत दिए गए प्रावधानों के मुताबिक हम अधिक से अधिक संसाधनों को चिन्हित कर उससे निकायों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सक्षम बनाएं। इन स्रोत से आने वाले राजस्व का इस्तेमाल वहां के नागरिकों को बेहतर नगरीय सुविधा और जीवन स्तर प्रदान करने में किया जाए।

सभी नगर निकाय बकाया होल्डिंग टैक्स सहित विभिन्न प्रकार के कर वसूली को भी प्राथमिकता सूची में रखें ताकि नगर निकायों को और सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया जा सके तथा नागरिकों को बेहतर नगरीय सुविधा उपलब्ध कराया जा सके।

प्रधान सचिव नें अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि निकायों के आर्थिक संवर्द्धन का सीधा लाभ संबंधित निकाय के नागरिकों को मिलेगा। उन्होंनें राज्य के विभिन्न शहरी निकायों में स्थित केन्द्रीय संस्थानों,कार्यालयों तथा राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के पास लंबित होल्डिंग टैक्स की वसूली नहीं होने पर चिंता जताते हुए निर्देश दिया कि इसकी वसूली के लिए प्लान बनाकर कार्य करें।

प्रधान सचिव की बैठक में दिया निर्देश झारखंड नगरपालिका अधिनियम में ऐसे कई प्रावधान हैं जिसके माध्यम से नगर निकायों के आय में वृद्धि की जा सकती है ,उन प्रावधानों के तहत संसाधनों को चिन्हित कर राजस्व वृद्धि की दिशा में कार्य शुरु करनें का निर्देश दिया गया है ताकि लोगों को बेहतर नागरिक सुविधा प्रदान किया जा सके।

केन्द्रीय संस्थानों सीसीएल, बीसीसीएल, पोस्ट ऑफिस,सेल,रेलवे इत्यादि पर होल्डिंग टैक्स के रुप में 200 करोड़ रुपए से ज्यादा बकाया राशि की वसूली में तेजी लानें का निर्देश दिया गया। सचिव नें निर्देश दिया कि राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के वैसे भवन जहां से होल्डिंग टैक्स नहीं प्राप्त हो रहा है ,उसके लिए वित्त विभाग और अन्य विभाग से समन्वय स्थापित कर बजटीय उपबंध कराएं। जियाडा क्षेत्र में अवस्थित औद्योगिक प्रतिष्ठान होल्डिंग टैक्स नहीं दे रहे हैं, वहां से होल्डिंग टैक्स लेनें की प्रक्रिया शुरु करें। झारखंड उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार औद्योगिक क्षेत्र के मामलें में जमशेदपुर , जिसे विशेष रुप से औद्योगिक नगरी का दर्जा प्राप्त है,को छोड़कर अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों को होल्डिंग टैक्स का भुगतान करना है।

बैठक में विशेषज्ञों नें बताया कि 15वें वित्त आयोग के अनुरुप संपत्ति कर में किए गए सुधारों के कारण कर संग्रहण में वृद्धि हुई है। 2020-21 में इस मद् में कर संग्रहण 147 करोड़ रुपया था जो 2023-24 में बढ़कर 220 करोड़ रुपया हो गया है। हालांकि अभी कई क्षेत्रों में सुधार की संभावना है।

विभागीय प्रधान सचिव ने यह भी निर्देश दिया कि राज्यभर में नगरपालिकाओं के पास कई व्यावसायिक भवन हैं जिनका ब्यौरा सही तरीके से नही रखा जा रहा है और न हीं उसका किराया निर्धारण और वसूली सही तरीके से हो रहा है वैसे में डिजीटलाईजेशन ऑफ मुनिसिपल एसेट्स के तहत राज्यभर में नगर निकायों के परिसंपत्तियों का डिजीटलाईजेशन कराकर उससे आनेवाले लाभांश को बढ़ाया जाय।

बैठक में ये भी रहे मौजूद बैठक में प्रधान सचिव के अलावा राज्य शहरी विकास भिकरण के निदेशक अमित कुमार, विभाग में अपर सचिव ज्ञानेन्द्र कुमार और नगर विकास विभाग के अन्य पदाधिकारी तथा कर क्षेत्र के विशेषज्ञ मौजूद रहे।

उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री से मिले युवा कांग्रेस नेता रोहित सिन्हा

रांची : युवा कांग्रेस नेता रोहित सिन्हा ने उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री से मिलकर उन्हें फूलों का गुलदस्ता देकर अभिनंदन किया। रोहित सिन्हा ने उपायुक्त को शहर में व्याप्त जाम की समस्या से अवगत कराया। उन्होंने शहर को जाममुक्त करने के लिए ठोस कदम उठाने की मांग की। इसके अलावा रोहित सिन्हा ने उपायुक्त का ध्यान फुटपाथ दुकानदारों की समस्या एवं स्थाईकरण, शहर के सड़कों में गड्ढे, नालियों के जाम रहने की स्थिति सड़कों में पानी बहने और जगह-जगह पेयजल आपूर्ति की पाइप फटने के कारण पानी की बर्बादी सहित अन्य समस्याओं की ओर आकृष्ट कराया। उपायुक्त ने कहा कि स्वयं शहर का भ्रमण कर समस्याओं को देख रहे है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि जल्द से जल्द विभिन्न समस्याओं से शहर के लोगों को निजात मिल जाएगी।

श्री रोहित ने डीसी द्वारा चलाएं जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं को लागू करने के उनके प्रयास को सराहते हुए एवं जनता के लिए 24 घंटे टोल फ्री नंबर जारी करने के लिए आभार प्रकट किया।

श्री गुरु तेग बहादुर जी का शहीदी गुरु पर्व मनाने को लेकर बैठक

रांचीः श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व समेत दिसंबर तथा जनवरी माह में होने वाले गुरुपर्व को लेकर गुरुद्वारा श्री गुरु नानक सत्संग सभा,कृष्णानगर कॉलोनी में आज एक विशेष बैठक बुलाई गई. सत्संग सभा के सचिव अर्जुन देव मिढ़ा ने बताया कि कल 6 दिसंबर को सत्संग सभा द्वारा कृष्णा नगर कॉलोनी में श्री गुरु तेग बहादुर जी का शहीदी गुरु पर्व मनाया जाएगा, इस उपलक्ष में सुबह 8:00 बजे से 9.15 बजे तक विशेष दीवान सजाया जाएगा.दीवान में स्त्री सत्संग सभा तथा हजूरी रागी जत्था भाई महिपाल सिंह जी द्वारा शबद गायन होगा एवं गुरुद्वारा के हेड ग्रंथ ज्ञानी जिवेंदर सिंह जी कथा वाचन से साध संगत को निहाल करेंगे.

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व समेत दिसंबर तथा जनवरी माह में होने वाले सभी कार्यकर्मों को लेकर सत्संग सभा के अध्यक्ष द्वारका दास मुंजाल की अध्यक्षता में गुरुवार को एक बैठक बुलाई गई जिसमें आगामी कार्यक्रमों को लेकर विस्तार से विचार विमर्श किया गया और सर्वसम्मति से सभी कार्यक्रमों की रुपरेखा तय की गई.तय कार्यक्रम के अनुसार 21 दिसंबर से 28 दिसंबर तक सत्संग सभा द्वारा श्री गुरु गोविंद सिंह जी के परिवार की शहादत की स्मृति में शहादत सप्ताह मनाया जाएगा.

नव वर्ष के आगमन की खुशी में 1 जनवरी को सुबह 8:00 बजे से 10:00 बजे तक विशेष दीवान सजाया जाएगा, इस दीवान में दरबार साहिब के भाई कमलजीत सिंह जी एवं भाई मान सिंह जी विशेष रुप से शिरकत करेंगे.

श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का प्रकाश पर्व 6 जनवरी को मनाया जाएगा, इस उपलक्ष में रात 8:00 बजे से 1.00 बजे तक विशेष दीवान सजाया जाएगा तथा रात 12:00 बजे प्रकाश पर्व के उपलक्ष में 4 जनवरी को रखे गए श्री अखंड पाठ साहिब जी का भोग होगा.श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में 23 दिसंबर से 31 दिसंबर तक सत्संग सभा द्वारा रोजाना सुबह 6:00 बजे प्रभात फेरी निकाली जाएगी.पटना साहब में प्रकाश पर्व में शामिल होने के लिए गुरु नानक सत्संग सभा के 240 श्रद्धालुओं का जत्था तीन एवं चार जनवरी को हटिया रेलवे स्टेशन से हटिया पटना सुपरफास्ट एक्सप्रेस द्वारा पटना साहिब के लिए रवाना होगा और प्रकाश पर्व के सभी आयोजनो में शामिल होने के बाद श्रद्धालुओं का जत्था 8 जनवरी को वापस रांची पहुंचेगा. श्रद्धालुओं के जत्थे के रांची वापस पहुंचने के बाद 11 एवं 12 जनवरी को सत्संग सभा द्वारा श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में दो दिवसीय भव्य विशेष दीवान सजाया जाएगा, जिसमें 11 जनवरी,शनिवार को सुबह आठ से 10 बजे तक तथा रात आठ बजे से ग्यारह बजे तक एवं 12 जनवरी,रविवार को सुबह दस बजे से दोपहर ढाई बजे तक विशेष दीवान सजाया जाएगा. इन सभी दीवानों में विशेष रूप से शिरकत करने पहुंच रहे सिख पंथ के महान कीर्तनी जत्था भाई गुरमन प्रीत सिंह जी,दिल्ली वाले शबद गायन कर राची की साध संगत को निहाल करेंगे. सभी दीवानों की समाप्ति के उपरांत सभा द्वारा गुरु का अटूट लंगर चलाए जाएगा. बैठक का संचालन सत्संग सभा के सचिव अर्जुन देव मिढ़ा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन मनीष मिढ़ा ने किया.

बैठक में द्वारका दास मुंजाल,अर्जुन देव मिढ़ा, सुरेश मिढ़ा,हरविंदर सिंह बेदी,चरणजीत मुंजाल,मनीष मिढ़ा,नरेश पपनेजा,नीरज गखड़,अश्विनी सुखीजा,हरगोविंद सिंह,मोहन काठपाल,अमरजीत गिरधर,लेखराज अरोड़ा, अशोक गेरा,रमेश पपनेजा,इंदर मिढ़ा,नवीन मिढ़ा,रमेश गिरधर, सागर थरेजा, बसंत काठपाल, विनोद सुखीजा, हरविंदर सिंह हन्नी,राकेश गिरधर एवं कमल मुंजाल उपस्थित थे.

अनुभाजन क्षेत्र के सभी दाल-भात केंद्र के संचालकों के साथ बैठक

रांची। विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी रांची, मोनी कुमारी द्वारा समाहरणालय ब्लॉक ए स्थित अपने कार्यालय में अनुभाजन क्षेत्र के सभी दाल-भात केंद्र के संचालकों के साथ बैठक आयोजित की गई।

बैठक में सभी दाल-भात केंद्र के संचालक एवं सम्बंधित पदाधिकारी उपस्थित थे। समय पर दाल-भात केंद्र खुलने एवं सभी को तय दर पर भोजन देने का निर्देश विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी रांची, श्रीमती मोनी कुमारी द्वारा सभी दाल-भात योजना के संचालक को निर्देश देते हुए कहा की समय पर दाल-भात केंद्र खुले, सभी को तय दर पर भोजन देने का निर्देश दिया गया।

विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी द्वारा सभी संचालकों निर्देश देते कहा की इन केंद्रों में कोई गड़बड़ी नही मिलनी चाहिए। इसके लिए उनके द्वारा सभी दाल-भात केंद्रों का औचक निरीक्षण करेंगी। उनके द्वारा विशेष रूप से कहा गया की दाल-भात केंद्र की नैतिक जिम्मेदारी हैं, की केंद्र में आने वालें को भोजन मिलें।

विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी द्वारा पंजी का भी अवलोकन किया गया। जिसमें उन्होंने पाया की पंजी का संधारण ठीक से किया गया हैं।

घर में अवैध रूप से गांजा बेचते पकड़ाया

दिनांक- 4.12.2024 को समय 14.00 बजे अपराहन में पुलिस अधीक्षक, गुमला को गुप्त सूचना मिला कि सिसई रोड में स्थित गांधीनगर के पास कुछ महिलाओं के द्वारा अपने घर में अवैध रूप से गांजा बेचा जा रहा है जिससे आस-पास के नावालिक बच्चों पर दुसप्रभाव पड़ रहा है, जिसके बाद अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी गुमला के नेतृत्व में एक छापामारी टीम का गठन किया गया तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी गुमला के साथ पु०अ०नि० मुनेश तिवारी, पु०अ०नि० अमर शुक्ला, म०स०अ०नि० हेमा देवी, महिला आरक्षी-560 जगसेनी देवी, (आई०आर०बी०) आरक्षी-265 अविनाश कुमार पाण्डेय एवं (आई०आर०बी०) आरक्षी-570 औरंगजेब खान के साथ सूचना का सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई करने हेतु थाना से प्रस्थान कर सिसई रोड गांधीनगर स्थित 1. सुनीता देवी उम्र 41 वर्ष पति-तेजपाल राम 2. बीणा देवी उम्र 34 पति-दुर्गा राम 3. बिनीता देवी उम्र 27 वर्ष पति-शुभम पासवान तीनों सिसई रोड गांधीनगर थाना जिला-गुमला के मकान पर पहुंचकर तीनों के घर का बारी-बारी से तलाशी लिया गया, जहाँ 1. बीणा देवी के बेडरूम से गांजा जैसा पदार्थ का वनज 740 ग्राम एवं गांजा बेचने के लिए पुड़िया बनाने वाला 250 पीस पाउच मिला | 2. सुनीता देवी के घर का तलाशी लेने पर उसके घर से एक सफेद रंग का प्लास्टिक मिला जिसमें गांजा जैसा पदार्थ का वनज 120 ग्राम मिला | 3. बिनिता देवी उर्फ एतवारी देवी के घर का तलाशी लेने पर उसके घर से एक सफेद रंग का प्लास्टिक में गांजा जैसा पदार्थ का वनज 430 ग्राम मिला। गांजा जैसा पदार्थ के बारे में तीनों महिला से पुछ-ताछ करने पर तीनों के द्वारा कोई संतोष जनक जबाव नहीं दिया गया।

रांची। राजभवन में हेमंत मंत्रिमंडल का विस्तार हो गया। सबसे पहले झारखंड के राज्यपाल संतोष गंगवार ने प्रो स्टीफन मरांडी को प्रोटेम स्पीकर पद का शपथ दिलाएं।

अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का डिप्लोमा प्रोग्राम्स में 2025-26 के लिए प्रवेश प्रारंभ

रांची। अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय एजुकेशन में डिप्लोमा प्रोग्राम्स के लिए आवेदन आमंत्रित किया गया है। डिप्लोमा प्रोग्राम अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के बेंगलूरु कैम्पस में चलेंगे। विश्वविद्यालय प्रबंधन के मुताबिक यह एक साल के पार्ट-टाइम डिप्लोमा का पाठ्यक्रम है। इसमें शिक्षा क्षेत्र के सिद्धांतों और उसके व्यावहारिक पक्षों को समान रूप से पढ़ाया जायेगा। कक्षाएं ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से होंगी। इन डिप्लोमा प्रोग्राम्स का मक़सद बेहतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की कमी को पूरा करना है, ताकि स्कूल व्यवस्था में काम करने वाले पेशेवरों और शिक्षकों में आवश्यक क्षमता और कौशल विकसित किए जा सके। इस संबंध में निदेशक अंकुर मदान ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार समावेशी समाज का लक्ष्य पूरा करने के लिए तैयार किए गए हैं।आवेदन की आख़िरी तारीख़ 12 जनवरी 2025 है।

अनुभाजन क्षेत्र के सभी दाल-भात केंद्र के संचालकों के साथ बैठक

रांची। विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी रांची, मोनी कुमारी द्वारा समाहरणालय ब्लॉक ए स्थित अपने कार्यालय में अनुभाजन क्षेत्र के सभी दाल-भात केंद्र के संचालकों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में सभी दाल-भात केंद्र के संचालक एवं सम्बंधित पदाधिकारी उपस्थित थे। समय पर दाल-भात केंद्र खुलने एवं सभी को तय दर पर भोजन देने का निर्देश विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी रांची, मोनी कुमारी द्वारा सभी दाल-भात योजना के संचालक को निर्देश देते हुए कहा की समय पर दाल-भात केंद्र खुले, सभी को तय दर पर भोजन देने का निर्देश दिया गया।

विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी द्वारा सभी संचालकों निर्देश देते कहा की इन केंद्रों में कोई गड़बड़ी नही मिलनी चाहिए। इसके लिए उनके द्वारा सभी दाल-भात केंद्रों का औचक निरीक्षण करेंगी। उनके द्वारा विशेष रूप से कहा गया की दाल-भात केंद्र की नैतिक जिम्मेदारी हैं, की केंद्र में आने वालें को भोजन मिलें।

विशिष्ट अनुभाजन पदाधिकारी द्वारा पंजी का भी अवलोकन किया गया। जिसमें उन्होंने पाया की पंजी का संधारण ठीक से किया गया हैं।

संथाल समाज की अस्मिता केलिए मांझी थान और जाहर थान का संरक्षण आवश्यक : बाबूलाल मरांडी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवम पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा कि संथाल समाज की अस्मिता और संस्कृति उनके पवित्र पूजा स्थल जाहर थान और मांझी थान से जुड़े हैं। श्री मरांडी आज अपने विधानसभा क्षेत्र में इन पूजा स्थलों पर शिलान्यास करते हुए बोल रहे थे।

श्री मरांडी ने कहा कि आज अपने गांव कोदईबांक के मुहाने पर मांझी थान (संताल आदिवासी समाज के पूजा स्थल) के शिलान्यास का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

संथालों का दो ही पूजा स्थल होता है, एक जाहेर थान और दूसरा मांझी थान... ये हमारे संताल समाज की पवित्र पहचान है।

अगर गांव से मांझी थान और जाहेर थान समाप्त हो जाएगा, तो संथाल जाति भी समाप्त हो जाएगी। हम तभी तक संथाल हैं, जब तक हम जाहेर थान-मरांग बुरू को पूजते हैं।

जाहेर थान में मरांग बुरू की पूजा संथालों की पहचान है। ठीक वैसे ही, हम पिलचु हाड़म और पिलचु बूढ़ी के वंशज हैं और उनकी आराधना करते हैं। यही हमारी जड़ें, हमारी परंपरा और हमारे संथाल होने की सबसे बड़ी पहचान है।

वेदांता ई एस एल स्टील लिमिटेड ने बोकारो जिले के चास और चंदनकियारी ब्लॉक के 33 प्रतिभाशाली युवाओं को सम्मानित किया

बोकारो | 5 दिसंबर, 2024: वेदांता ई एस एल स्टील लिमिटेड ने सामाजिक और सामुदायिक विकास के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, विशेष रूप से अपने आस-पास के क्षेत्रों में, बोकारो जिले के चास और चंदनकियारी ब्लॉक के ग्रामीण युवाओं को सराहना और पुरस्कृत करने के लिए भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया। उत्कृष्टता के इस उत्सव में शिक्षा, कौशल और खेल पर केंद्रित अपने विभिन्न सीएसआर अंतर्गत कार्यक्रमों के तहत 33 उत्कृष्ट प्रतिभाओं को सम्मानित करना शामिल था।

भव्य सम्मान समारोह में भाग लेने वाले सियालजोरी में प्लांट परिसर के अंदर स्थित वेदांता ई एस एल तीरंदाजी अकादमी में भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग 200 लोग शामिल हुए, जिनमें श्री सुसैन राजवार (जिला परिषद प्रतिनिधि), श्री रोहित रजक (मुखिया, अलकुशा) और वेदांता ई एस एल के वरिष्ठ प्रबंधन के सदस्य शामिल थे। इनमें श्री रवीश शर्मा (मुख्य परिचालन अधिकारी, ई एस एल स्टील लिमिटेड), श्री अमल घोष (निदेशक, इंफ्रास्ट्रक्चर मैनेजमेंट) और डॉ. सरोज कुमार सिंह (निदेशक, स्टील) शामिल थे। गणमान्य व्यक्तियों के अलावा, दर्शक दीर्घा में छात्र, उनके माता-पिता, उनके शिक्षक और कोच, ई एस एल कार्यकर्ता, इन गांवों के आम नागरिक और 24 से अधिक पीआरआई सदस्य शामिल थे। दर्शकों ने अपने बच्चों के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए तालियाँ बजा कर उनका उत्साह वर्धन किया ।

दूसरों को भी उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरणा मिली बोकारो के इन ग्रामीण युवाओं को, सम्मानित करने वाला भव्य सम्मान समारोह व्यक्तियों को प्रेरित करने, प्रभावशाली कहानियों को प्रदर्शित करने और वेदांता ई एस एल की प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करना था, जो कि उनके हस्तक्षेपी कार्यक्रमों जैसे कि प्रोजेक्ट प्रेरणा और आस विद्यालय (शिक्षा में), वेदांता ई एस एल स्किल विद्यालय (सोलर और परिधान उद्योग के लिए उद्योग-तैयार युवाओं का निर्माण) और वेदांता ई एस एल तीरंदाजी अकादमी के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाने के लिए है, जो बोकारो के चास/चंदनकियारी ग्रामीण क्षेत्र के आसपास तीरंदाजों को बढ़ावा देने और विकसित करने का शानदार काम कर रहा है।

शैक्षणिक हस्तक्षेपकारी कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को तैयार किया गया

प्रोजेक्ट प्रेरणा के तहत 13 छात्रों को सम्मानित किया गया, जिनमें से 4 ने हाल ही में झारखंड राज्य पॉलिटेक्निक प्रवेश परीक्षा के लिए अर्हता प्राप्त की है और 9 ने एसएससी ग्रुप डिस्कशन चरण के लिए अर्हता प्राप्त की है। प्रोजेक्ट प्रेरणा के अलावा, आस विद्यालय के छात्रों को भी सम्मानित किया गया। जिसमें कक्षा दसवीं की परीक्षा में शीर्ष तीन प्रदर्शन करने वाले छात्र शामिल हैं, जिन्हें आस विद्यालय में नामांकन से लाभ मिला है और वे छात्र जो बिजुलिया, चंदनकियारी और योगीडीह में स्थित तीन एएएस विद्यालय कैफे में नियमित आंतरिक मूल्यांकन प्रतियोगिताओं में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुए हैं।

कौशल हस्तक्षेप कार्यक्रम में प्रतिभागियों को तैयार किया गया

वेदांता ई एस एल स्किल विद्यालय के तहत हाल ही में संपन्न सोलर पीवी इंस्टालर कोर्स में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए दो उत्कृष्ट प्रतिभागियों की भी सराहना की गई, जो सौर और परिधान उद्योग के लिए उद्योग-तैयार युवाओं का निर्माण कर रहा है। इस कौशल केंद्र ने अपने 80% से अधिक पूर्व छात्रों को उद्योग जगत के अग्रणी संगठनों में सर्वश्रेष्ठ स्थान दिलाया है।

वेदांता ई एस एल तीरंदाजी अकादमी में प्रतिभागियों को तैयार किया गया सबसे जोरदार तालियां उन तीरंदाजों के लिए बजी जिन्होंने वेदांता ई एस एल तीरंदाजी अकादमी के लिए पुरस्कार जीते हैं। कुल 6 तीरंदाजों को मंच पर बुलाया गया और पिछले साल उनके योगदान के लिए उनकी सराहना की गई ।

करमडीह जंगल में एक व्यक्ति को संदिग्ध हालत में पकड़ा

खूंटी कर्रा थाना कांड सं0-88/24, दिनांक-05.12.2024, धारा-25 (1-B)a/26 आर्म्स एक्ट एवं 17 सी०एल०ए० एक्ट । खूंटी। पुलिस अधीक्षक, खूंटी को गुप्त सूचना प्राप्त हुई की कर्रा थाना क्षेत्र अन्तर्गत करमडी जंगल में प्रतिवंधित पी०एल०एफ०आई० संगठन के कियावादी उग्रवादी घटना को अंजाम देने के फिराक में है। उक्त सूचना सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु पुलिस अधीक्षक, खूँटी के निर्देशानुसार अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, तोरपा के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए करमडीह जंगल में एक व्यक्ति को संदिग्ध हालत में पकड़ा गया। नाम पता पूछने पर अपना नाम गोविन्द मांझी उर्फ राजन दा उम्र करीब 28 वर्ष, पे०-राजेश मांझी उर्फ जंगल मांझी, थाना-तपकरा, जिला-खूँटी बताया। उक्त क्रियावादी का तलाशी लेने पर उसके पास से एक देशी कट्टा, जिन्दा कारतुस-03, मोबाईल फोन-02, पी०एल०एफ०आई० का पर्चा-02 बरामद हुआ। गोविन्द मांझी को गिरफ्तार किया गया। इनके गिरफ्तारी से खूँटी, रॉची, सिमडेगा, चाईवासा के कई लेवी एवं आगजनी के कांडों का उदभेदन हुआ है।

96 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद किया गया

कोडरमा । पुलिस अधीक्षक , कोडरमा को प्राप्त गुप्त सूचना के आधार पर अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, कोडरमा एवं पुलिस निरीक्षक, डोमचांच अंचल कोडरमा के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए ग्राम- नवलशाही स्थित विण्डोमोह चौक के पास गिरिडीह-कोडरमा मुख्य मार्ग पर गिरिडीह के तरफ से आने वाले वाहनों को जाँच किया जाने लगा। वाहन जाँच के क्रम में पिकअप वाहन संख्या- BR01GM 5334 को रोककर जाँच किया गया तो 96 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद किया गया, तथा गिरफ्तार पिकअप चालक राहुल सिंह से पुछताछ के बाद इसके निशानदेही पर नवलशाही थाना अंतर्गत ग्राम- पिछडी स्थित जंगल में एक टुटा-फुटा घर से 492 पेटी अंग्रेजी शराब बरामद किया गया साथ हीं घटना स्थल पर अवैध शराब कारोबार में परिवहन हेतु उपयोग में आने वाले पिकअप वाहन संख्या-BR01GJ 4570 एवं Tiago कार संख्य- JH10BW 5995 को जप्त किया गया एवं इस कारोबार में संलिप्त कुल पाँच (05) अभियुक्तो को गिरफ्तार किया गया। इस संबंध में नवलशाही थाना कांड संख्य- 68/24 दिनांक- 05.12.2024 धारा-317(5)/274/275 B.N.S एवं 47 (A) Excise act दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है।

बीआईटी सिंदरी तैयार है IEEE अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन BITCON-24 मेजबानी के लिए

बीआईटी सिंदरी ने प्रतिष्ठित IEEE फ्लैगशिप अंतरराष्ट्रीय बीआईटी सम्मेलन (BITCON-24) के आयोजन के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। यह सम्मेलन 7 और 8 दिसंबर 2024 को आयोजित किया जाएगा। सम्मेलन का विषय "हरित ऊर्जा प्रौद्योगिकी में अगली पीढ़ी के अनुप्रयोग" है, जिसका उद्देश्य वैश्विक शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्योग के नेताओं को हरित ऊर्जा में नवीन विचारों और प्रगति का आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच प्रदान करना है।

बीआईटी सिंदरी के निदेशक, प्रोफेसर (डॉ.) पंकज राय ने कहा, "BITCON-24 हमारे संस्थान की नवाचार और स्थिरता को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह आयोजन वैश्विक चुनौतियों और उन्नत तकनीकी समाधानों पर चर्चा करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करेगा।"

डॉ. एमडी अबुल कलाम, विद्युत अभियांत्रिकी विभागाध्यक्ष और BITCON-24 के सम्मेलन अध्यक्ष, ने विभाग के प्रयासों को उजागर किया। उन्होंने कहा, "हम इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की मेजबानी को लेकर उत्साहित हैं। इसमें सारांश सत्र, तकनीकी प्रस्तुतियां और कार्यशालाएं शामिल होंगी। हमारी टीम ने इस महत्वपूर्ण आयोजन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की है।"

सटीक योजना और तैयारी के साथ, BITCON-24 हरित ऊर्जा उत्साही लोगों के लिए एक प्रमुख आयोजन बनने के लिए तैयार है। बीआईटी सिंदरी सभी विशेषज्ञों, शिक्षाविदों और छात्रों को इस आयोजन में भाग लेने और आनंद लेने के लिए आमंत्रित करता है।

दीपिका पांडेय सिंह (कांग्रेस) ने मंत्रिपद की शपथ ली। दीपिका पांडेय सिंह महागामा से विधायक है।

जिला सलाहकार समिति (PC & PNDT) की बैठक

रांची। उपायुक्त, रांची मंजूनाथ भजन्त्री की अध्यक्षता में आज दिनांक 05 दिसंबर 2024 को जिला सलाहकार समिति (PC & PNDT) की बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान समिति द्वारा अल्ट्रासाउंड सेंटर के निबंधन, रिन्यूअल, संस्थानों को मशीन के फॉर्म-B में एंट्री, चिकित्सकों की जॉइनिंग एवं USG मशीन खरीदने पर विचार-विमर्श किया गया। अल्ट्रासाउंड सेंटर के निबंधन और रिन्यूअल के लिए प्राप्त अभ्यावेदनों पर विचार-विमर्श करते हुए समिति द्वारा 05 सेंटर के रिन्यूअल की स्वीकृति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त बैठक में समिति द्वारा 06 संस्थानों को मशीन के फॉर्म-B में एंट्री एवं सर्टिफिकेट जांच के बाद चिकित्सकों की ज्वाइनिंग का अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक के दौरान उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री ने अल्ट्रासाउंड सेंटर के निरीक्षण को लेकर आवश्यक व उचित दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सेंटर का निश्चित समय अंतराल पर निरीक्षण करें और नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध नियम संगत कार्रवाई सुनिश्चित करें। बैठक में सिविल सर्जन, डॉ. प्रभात कुमार, समिति सदस्य उर्वशी पांडेय, डॉ. अनुभी सिन्हा सहित अन्य सदस्य एवं PC & PNDT को-ऑर्डिनेटर राकेश कुमार राय उपस्थित थे ।

नया मोड़ बस स्टैंड पर यात्री सुविधाओं को करें सुदृढ़: डीसी

बोकारो। समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में गुरुवार को उपायुक्त (डीसी) विजया जाधव ने चास नगर निगम क्षेत्र एवं बीएस सिटी क्षेत्र में शहरवासियों को उपलब्ध सुविधाओं पर चर्चा की। मौके पर *अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना शेजवलकर, अपर नगर आयुक्त चास संजीव कुमार, मुख्य महाप्रबंधक नगर सेवाएं, बीएस सिटी कुंदन कुमार, सहायक नगर अयुक्त स प्रियंका कुमारी, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी अविनाश कुमार सिंह व अन्य* उपस्थित थे। उपायुक्त ने चास नगर निगम एवं बीएस सिटी को सुंदर एवं व्यवस्थित करने को लेकर क्रमवार विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की और जरूरी दिशा – निर्देश दिया। इस दौरान शहरवासियों से नयामोड़ स्थित बस स्टैंड की अव्यवस्था को लेकर मिल रही शिकायतों पर बीएसएल प्रबंधन पर गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने बस स्टैंड पर मूलभूत सुविधाओं (पेयजल, शैचालय, पार्किंग, फुटपाथ आदि) को अविलंब सुदृढ़ करने का निर्देश दिया।

मौके पर उपस्थित जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना शेजवलकर ने कहा कि जिला मुख्यालय स्थित एकमात्र बस स्टैंड है, राज्यीय – अंतरराज्यीय बसों का आवागमन प्रतिदिन होता है, लेकिन यात्री सुविधाएं नदारद हैं।

इस पर उपायुक्त ने बैठक में उपस्थित मुख्य महाप्रबंधक नगर सेवाएं श्री कुंदन कुमार को बस स्टैंड का निरीक्षण करते हुए यात्री सुविधाओं/व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने के दिशा में त्वरित कार्रवाई करने को कहा। वहीं, सड़कों की नियमित साफ – सफाई, घरों से निकलने वाले कचड़ों का सही से निस्तारण आदि को लेकर भी जरूरी दिशा – निर्देश दिया।

आगे, बैठक में भारत सरकार द्वारा चास नगर निगम क्षेत्र एवं बीएस सिटी का चयन के हाउस होल्ड मैपिंग – डिजिटलाइजेशन को लेकर चिन्हित किया गया है। इसको लेकर दोनों (नगर निगम प्रशासन/बीएसएल नगर) प्रबंधनों को सायनोप्सिस (सार/विवरण) जिसमें क्षेत्रफल, जनसंख्या, कुल वार्ड/सेक्टर आदि की जानकारी उल्लेखित करते हुए प्रतिवेदन समर्पित करने को कहा। इसके अलावा कई अन्य बिंदुओं पर भी जरूरी दिशा – निर्देश दिया।

आपका यह प्रयास न केवल छात्रों के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणादायक कदम है

आपका यह प्रयास न केवल छात्रों के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए एक प्रेरणादायक कदम है। पुस्तकालय जैसी सुविधा छात्रों के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस पहल से न केवल छात्रों को अध्ययन के लिए एक शांतिपूर्ण और समर्पित स्थान मिलेगा, बल्कि यह उन्हें ज्ञान प्राप्त करने और अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने की दिशा में प्रोत्साहित भी करेगा। उद्घाटन समारोह में रामाश्रय सिंह जैसे सम्मानित व्यक्तित्व की उपस्थिति आपके प्रयासों की प्रशंसा और मान्यता को दर्शाती है। साथ ही, छात्रों और अन्य सहयोगियों का जुड़ाव इस परियोजना की सामुदायिक स्वीकार्यता को रेखांकित करता है।

आपकी यह पहल वास्तव में एक प्रेरणा स्रोत है, और इस पुस्तकालय से अनेक छात्रों को लाभ मिलेगा। समाज को ऐसे ही सकारात्मक कार्यों की आवश्यकता है। आपके प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ सहयोग करने वालों के नाम।राजेश,अमृत, ऋषभ,नीलेश,विकास, लक्ष्मी,वंदना,संजय,अं

जली,मधु,नेहा रितेश।

शिल्पी नेहा तिर्की (कांग्रेस) ने मंत्रिपद की शपथ ली। शिल्पी नेहा तिर्की मांडर से विधायक हैं।

दीपक बिरुआ (झामुमो) ने मंत्री के रूप में शपथ ग्रहण किया। दीपक बिरुआ चाईबासा से विधायक हैं।

दिलीप सिंह ने कपकपाती ठंड में असहायों के बीच कंबल बांटकर मानवता की मिशाल पेश की

धनबाद. सामाजिक कार्यों में बढ़चढ़कर योगदान देनेवाले युवा संघर्ष मोर्चा के संस्थापक दिलीप सिंह इस कपकपाती ठंड में गरीब जरूरतमंदो का सहारा बने. हर वर्ष की भांति उन्होंने जरूरतमंदो के बीच कंबल वितरण की शुरुआत की.ठंड में लाचार, असहाय व गरीबों को बचाने के उद्देश्य से बुधवार की आधी रात अपने संगठन के सदस्यों के साथ सड़कों पर निकल पड़े. जहाँ भी ठंड से ठिठुरते गरीब गुर्बा को देखा उन्हें कंबल देकर उन्हें ठंड से राहत पहुंचाई.धनबाद स्टेशन रोड में दर्जनों लोगों के बीच कंबल बांटे. ठंड में राहत देने के लिए कंबल वितरण कर रहे दिलीप सिंह के इस नेक कार्य की सरहाना करते हुए लोगों ने उन्हें माला पहनाकर उनका आदर सत्कार भी किया.स्थानीय लोगों ने कहा कि ठंड की रात में असहायों के बीच कंबल वितरण करना एक साहसिक कदम है। रात के अंधेरे में जब सारा जहां ठंड से अपने घरों में दुबके हों ऐसी परिस्थिति में असहायों की सुधि लेने की दिलीप सिंह ने बहार निकल गरीबों का दर्द समझ असहायों के बीच कंबल बांटे. दिलीप सिंह ने कहा कि निर्धारित रूपरेखा के तहत गरीब लोगों को मदद की जाती है। धर्म और जाति बंधन से दूर हटकर ठंड के मौसम में गर्म कपड़े और कंबल का वितरण किया जाता है। कड़ाके की ठंड में असहायों की सेवा ही मानवता की सेवा है। जरूतमंदो के लिए वे सदैव मदद के लिए तैयार हैं और आगे भी रहेंगे.मौक़े पर बड़े, ललीट केटसरीय,बृजन, राजा संतोष सिंह, रिपु सिंह, बृजेश,सुरेंद्र गिरी, सोनी सरदार

ह्यूमैनिटी हेल्पिंग हैंड्स टीम का आधी रात को जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण

धनबाद- बढ़ते ठंड के साथ ही जरूरतमंदों के लिए सामाजिक संस्था ह्यूमैनिटी हेल्पिंग हैंड्स के संस्थापक सह केंद्रीय अध्यक्ष गौतम कुमार मंडल सामने आया और देर रात रोड किनारे लाचार हालत में खुले आसमान के नीचे रात गुजार रहे दीन-दुखियों को कंबल देकर राहत देने की कोशिश की साथ भूखें पेट रहने पर रात में खाना लाकर देने का काम किया । गौतम मंडल ने कहा बीते रात से ह्यूमैनिटी टीम का कंबल वितरण कार्यक्रम की शुरूवात हो चुकी है अब रात को जो भी लाचार ह्यूमैनिटी टीम के सदस्य को ठंड में दिखेगा ह्यूमैनिटी हेल्पिंग हैंड्स जाकर कंबल वितरण करेगा। जहाँ मोके पर ह्यूमैनिटी हेल्पिंग हैंड्स के संस्थापक सह केंद्रीय अध्यक्ष गौतम कुमार मंडल, राजीव कुमार, चिरंजीत मंडल, रॉकी मंडल, भजन एवं अन्य मौजूद थे।

महाराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रजरप्पा के बोरिया बाबा से ले चुके है आशीर्वाद

रजरप्पा बीते चार वर्ष पूर्व महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री सह तत्कालीनबिहार विधानसभा चुनाव भाजपा के चुनाव प्रभारी देवेंद्र फडणवीस रजरप्पा पहुंचकर माँ छिन्नमस्तिके मंदिर में पूजा अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया था। इस दौरान देवेंद्र बोरिया बाबा उर्फ हरेराम आचार्य के आश्रम में गुप्त साधना की थी. साथ ही बोरिया बाबा से आशीर्वाद भी लिया था. गुरुवार को वे महाराष्ट्र राज्य के लिए (तीसरी बार बने) मुख्यमंत्री का शपथ लिया. बताते चले कि उन्होंने 2014 से 2019 तक महाराष्ट्र के 18वें मुख्यमन्त्री के रूप में कार्य किया और 44 वर्ष की आयु में राज्य के दूसरे सबसे कम उम्र के मुख्यमंत्री बने थे.

पेड़ गिरने से दुर्घटना की संभावना

मुरीः सिल्ली प्रखंड अंतर्गत सिंगपुर नर्सिंग होम के समीप सटा हुआ एक सुखा पेड़ दुर्घटना को आमंत्रित कर रहा है।इस सड़क पर रोजाना स्कूल के बच्चे, समेत ग्रामीण,एवं मरीजों का आना जाना लगा रहता है। लेकिन किसी प्रकार का इस दुर्घटना वाली पेड़ को नहीं देखते हैं, जबकि सिंगपुर नर्सिंग होम से यह पेड़ सटा हुआ है। पेड़ निचे से पुरा खोखला हो गया है। किसी भी वक्त यह पेड़ गिर सकता है लेकिन नर्सिंग होम के द्वारा ना स्कूल के द्वारा किसी प्रकार का कोई ठोस कदम उठाया जा रहा है। रोजाना मरिज सड़क पर टहलने निकलते हैं, स्कूल के बच्चों भी समय पर निकलते हैं ग्रामीणों का भी आना जाना रहता है। अगर किसी प्रकार की दुर्घटना हो जाती है तो उसका जिम्मेदार कौन है।

सिल्ली के आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों के बीच स्वेटर का वितरण

सिल्लीः सिल्ली प्रखंड के सभी 155 आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों के बीच स्वेटर वितरण पूर्ण कर लिया गया है। इसकी जानकारी देते हुए सिल्ली सीडीपीओ अर्चना एक्का ने सभी बच्चों के अभिभावकों को ठंढ मे स्वेटर पहना कर नियमित आंगनबाड़ी केन्द्र भेजनें की अपील की। साथ ही उन्होंने कहा कि ठंड का मौसम देखते हुए झारखंड सरकार की यह एक अच्छी योजना हैं।ठंड के इस मौसम में बच्चों को गर्म कपड़ों की जरूरत होती है सरकार ने बच्चों की जरूरत को ध्यान में रखते हुए यह सराहनीय पहल की है उन्होंने सरकार के पल की सराहना की और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं और सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की है।

सिल्ली पुलिस की कार्रवाई से बालु कारोबारियों की परेशान बढ़ी, दो वाहन जप्त

सिल्लीः सिल्ली पुलिस की करवाई से बालू कारोबारियों की परेशानी बढ़ गई है। पुलिस ने मंगलवार को दो बालू लदे वाहनों पर कांड संख्या 104/24 के तहत प्राथमिकी दर्ज की है। सिल्ली थाना प्रभारी दिनेश ठाकुर ने बताया कि ये बालू लदे ट्रक पुलिस ने गश्ती के क्रम में पोगड़ा इलाके के जप्त किए है। जप्त किए जाने के बाद इसे खनन विभाग को सौंप दिया गया। जिला खनन पदाधिकारी के प्रतिवेदन पर प्राथमिकी दर्ज करके अनुसंधान किया जा रहा है।

तेज रफ्तार का कहर

राँची के तीन लोगों की दर्दनाक मौत दो की स्थिति नाजुक,रिम्स रेफर..

गुमला/राँची। झारखण्ड के गुमला जिले के बसिया थाना गेट के समीप भीषण सड़क दुर्घटना हुई है।इस दुर्घटना में तीन लोगों की मौत हो गई है वहीं दो लोग गंभीर रूप से घायल हैं। घटना बुधवार की देर रात दो बजे की है।बताया जा रहा है कि बसिया चेकनाका के समीप खड़ी बीड़ी पत्ता ट्रक को कार ने पीछे से टक्कर मार दिया। जिससे कार के परखच्चे उड़ गए। सभी मृतक पिस्का मोड़ हेसल देवी मंडप रोड के रहने वाले है। सभी राँची से सिमडेगा शादी समारोह में शामिल होने गए थे जहाँ से लौटने के क्रम में यह हादसा हुआ है। मृतकों में प्रवीण कुमार, रतन घोष व पवन साहू है।जबकि विश्वजीत घोष एवं असीम घोष घायल है। बताया जा रहा है कि सभी लोग एक ही कार में राँची से सिमडेगा शादी समारोह में गए थे।शादी समारोह संपन्न होने के बाद सभी लौट रहे थे।

सभी मृतक पिस्का मोड़ हेसल देवी मंडप रोड के रहने वाले है। सभी राँची से सिमडेगा शादी समारोह में शामिल होने गए थे जहाँ से लौटने के क्रम में यह हादसा हुआ है।

तभी बसिया के समीप खड़ी ट्रक से उनकी कार जा टकराया। जिससे यह घटना घटी।रात को ही पुलिस पहुंची और सभी को उठाकर अस्पताल लाया।जहाँ डॉक्टर ने तीन लोगों को मृत घोषित कर दिया।वहीं घायलों का प्रारंभिक इलाज अस्पताल में चला।स्थिति देखते हुए राँची रेफर किया गया।एक कि स्थिति गम्भीर बनी हुई है।वहीं इधर सूचना है कि एक युवक की मौत राँची लाने के दौरान हो गई है।हलांकि इसकी पुष्टि नहीं हो पा रही है।

बाबा बैद्यनाथ को लगाया गया नए अन्न का भोगः नवान्न पर की गई विशेष पूजा-अर्चना, शुरू हुई देवघर वासियों के नए अन्न खाने की शुरुआत

देवघर देवघर में गुरुवार को नवान्न पारंपरिक तरीके से मनाया गया। सबसे पहले सुबह बाबा बैद्यनाथ को नए अन्न का भोग लगाया गया। इसमें नया चावल, घंघरा, दही-दूध, गुड़, चूड़ा सहित विभिन्न प्रकार के सामग्री मिलाकर भोलेनाथ को भोग लगाया गया। इसके बाद स्थानीय लोगों ने अपने-अपने घरों में पूजा-अर्चना कर नया अन्न ग्रहण किया। मंदिर प्रबंधन की ओर से मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष पंचमी के शुभ अवसर पर बाबा बैद्यनाथ की विशेष पूजा-अर्चना की गई। स्थानीय तीर्थ पुरोहित राजू मिश्रा ने बताया कि बाबा पर शाकल्य के रूप में नए अन्न को चढ़ाया गया। देवघर में ऐसी मान्यता है कि सबसे पहले बाबा बैद्यनाथ को नए अन्न का भोग लगेगा, इसके बाद ही लोग इसे ग्रहण करेंगे। नवान्न के मौके पर बाबा बैद्यनाथ धाम में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़। नवान्न के मौके पर बाबा बैद्यनाथ धाम में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़। यह त्योहार मूलतः किसानों के लिए है, जो इस मौसम में धान की उपज करते हैं। अगहन मास में धान तैयार हो जाता है और उसे काटकर खलिहान में लाया जाता है। धान से चावल और चूड़ा तैयार करने के बाद नवान्न पर उससे पूजा की जाती है। इसके बाद उसे खाया या बेचा जाता है। वहीं, शाम में स्थानीय लोगों के घरों में जड़हन चावल से भात पकाया जाता है और पांच तरह की मौसमी सब्जी मिलाकर घघरघंट बनाया जाता है।

वित्तीय वर्ष-2023-24 में लैंप्स पेक्स में 500Mt. क्षमता के गोदाम निर्माण के लिए स्थल चयन

रांची। उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री द्वारा समाहरणालय ब्लॉक- ए स्थित सभागार में वित्तीय वर्ष-2023-24 में लैंप्स पेक्स में 500Mt. क्षमता के गोदाम निर्माण के लिए स्थल चयन, सिद्धों कान्हो कृषि एवं वनोपज जिला सहकारी संघ लिमिटेड, रांची के निदेशक पार्षद एवं जिला स्तरीय अनुश्रवण समिति (सहकारिता), DCDC की तृतीय, बैठक आयोजित करते हुए सम्बंधित सभी पदाधिकारियों से एजेंडावार समीक्षा करते हुए उन्हें कई आवश्यक दिशा- निर्देश दिए गए।

संबंधित वनोपजों के उत्पादन स्थलों के चिन्हितीकरण हेतु निर्देश बैठक में उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री द्वारा सिद्धो कान्हो कृषि एवं वनोपज जिला सहकारी संघ, लि०. रांची के निदेशक पर्षद के बैठक में कृषक हित में ईमली, चिरौंजी एवं अन्य लधुवनोपज हेतु Integrated proceesing unit के अधिष्ठापन का कार्य संबंधित लघुवनोपज उत्पादन क्षेत्र में ही स्थापित करने का निर्देश सम्बंधित पदाधिकारी को दिया गया। जिसके लिए संबंधित वनोपजों के उत्पादन स्थलों के चिन्हितीकरण हेतु निर्देश दिया गया। उनके द्वारा इन वनोपजों से संबंधित छोटे-छोटे ईकाईयों की स्थापना हेतु निर्देश दिया गया।

यथाशीघ्र संचिका प्रस्तुत करने का निर्देशउपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री द्वारा समीक्षा करते हुए रांची जिले में 500 एम०टी० के कुल-06 गोदाम निर्माण हेतु प्राप्त प्रस्तावों पर विमर्श किया गया। जिसमें उनके द्वारा सिल्ली प्रखण्ड में सिल्ली एवं रामपुर, बेडो प्रखण्ड में बेड़ो. काके प्रखण्ड में अरसण्डे एवं पिठोरिया तथा लापुंग प्रखण्ड में मालगो मे 500 एम०टी० गोदाम निर्माण हेतु स्थल के चयन/निर्धारण से संबंधित, संबंधित अंचल के अंचलाधिकारी से प्रतिवेदन प्राप्त कर यथाशीघ्र संचिका प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया।

राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं को आमेलित कर समग्र आर्थिक विकास सुनिश्चित करने का निर्देशउपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री द्वारा District Co-Operative Development Committee की बैठक में समीक्षा करते हुए बहुउद्देशीय लैम्पस / पैक्स/ डेयरी / मत्स्यजीवी सहकारी समिति के साथ नई सहकारी समितियों के पंजीकरण, जिला स्तरीय सहकारी बैंक से सम्बद्धता के साथ-साथ सहकारी समितियों को भारत सरकार एवं राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं को आमेलित कर समग्र आर्थिक विकास सुनिश्चित करने का निर्देश उपायुक्त, रांची द्वारा दिया गया।

आवश्यक त्रुटि सुधार कर रिपोर्ट समर्पित करने का निर्देश उपायुक्त श्री मंजूनाथ भजंत्री द्वारा बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना खरीफ 2024 के अन्तर्गत जिला स्तरीय अनुश्रवण समिति (DLMC) के बैठक में कुल बुआई क्षेत्र से अधिक क्षेत्र का बीमा से संबंधित आवेदन होने के कारण उपायुक्त, रांची के द्वारा इस संबंध में बैठक में उपस्थित बिरसा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना खरीफ 2024 के लिए नोडल एजेंसी बजाज एलियांज जी०आई०सी० लि०, रांची के क्लस्टर प्रबंधक को एक पक्ष का समय देते हुए इस संबंध में आवश्यक त्रुटि सुधार कर रिपोर्ट समर्पित करने का निर्देश दिया गया।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन नई सरकार के गठन के साथ एक्शन मोड में

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन राज्य की बागडोर संभालने के साथ एक्शन मोड में आ चुके हैं । उन्होंने आज नई सरकार के मंत्रिपरिषद के गठन के साथ झारखंड आंदोलनकारियों को एक बड़ा तोहफा दिया। मुख्यमंत्री ने झारखंड आंदोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग, रांची द्वारा चिन्हित 299 आंदोलनकारियों की 30 वीं संपुष्ट सूची को मंजूरी प्रदान कर दी है। इनमें 144 चिन्हित आंदोलनकारी / आश्रित को 35 सौ रुपए और एक आंदोलनकारी / आश्रित को 7 हज़ार रुपए मासिक पेंशन मिलेगा। वहीं, 154 आंदोलनकारियों को प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया जाएगा। इन सभी को 20 अप्रैल 2021 की तिथि से सरकार द्वारा अनुमान्य सभी सुविधाएं दी जाएगी।

सिल्ली के विधायक अमित महतो से मिले झामुमो के युवा नेता कशिश

झारखंड मुक्ति मोर्चा के युवा नेता कशिश ने सिल्ली के विधायक अमित महतो से मुलाकात कर उन्हें पुष्प गुच्छ प्रदान किया, गौर तलब है कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ने सिल्ली से अमित महतो को एनडीए के सुदेश महतो के खिलाफ अपना उम्मीदवार बनाया था, चुनाव नतीजे आने के बाद दिल्ली से अमित महतो विजय रहे थे, विधायक अमित महतो से मुलाकात के बाद मीडिया से बात करते हुए कशिश ने बताया कि सिलाई की जनता को पूरा उम्मीद है कि विधायक अमित महतो आम जनता की समस्याओं का जल्द से जल्द निराकरण करेंगे, श्री कशिश ने कहा कि अमित महतो एक युवा नेता है और वह हर एक आम और खास आदमी के लिए 24 घंटे उपलब्ध रहते हैं, विधायक आवास में जाकर कोई भी उनसे मिलकर अपनी समस्या बता सकता है, श्री कशिश ने बताया कि झारखंड का शेर हेमंत सोरेन फिर से दोबारा मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठ गए हैं अब झारखंड की जनता की समस्या का निवारण निवारण चुटकियों में हो जाएगा, श्री कशिश ने अमित महतो के बारे में बताया कि वह काफी सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं वह अपने व्यक्तित्व की वजह से ही सिल्ली की जनता उन्हें विधायक बनकर विधानसभा के चौखट तक भेजा है

रजरप्पा क्षेत्र में साफ-सफाई, स्वच्छ पेयजल, क्वार्टर मरम्मत, खेल-कूद और सड़कों की स्थिति जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई

रजरप्पा रजरप्पा क्षेत्र की क्षेत्रीय कल्याण समिति की बैठक बुधवार महाप्रबंधक सभागार में आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक कल्याणजी प्रसाद ने की। बैठक में प्रबंधन और श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रबंधन की ओर से परियोजना पदाधिकारी (रप) आरके सिंह, स्टाफ अधिकारी (कार्मिक) मनोज कुमार, स्टाफ अधिकारी (सिविल) विमल कुमार आजाद, स्टाफ अधिकारी (ई&एम) राजेश कुमार, स्टाफ अधिकारी (उत्खनन) एसके सिंहा, क्षेत्रीय वित्त प्रबंधक संजय कुमार शर्मा, क्षेत्रीय चिकित्सा अधिकारी डॉ. एनके होरो, और क्षेत्रीय कल्याण अधिकारी आशीष झा उपस्थित थे। श्रमिक संगठनों की ओर से अनिल प्रसाद, चंदेश्वर सिंह, रविन्द्र वर्मा, अरुण चौधरी, प्रदीप कुमार, सुख सागर, शंकर चौरसिया, सीडी सिंह, संतोष कुमार और विजय पोद्दार उपस्थित रहे। बैठक में रजरप्पा क्षेत्र में साफ-सफाई, स्वच्छ पेयजल, क्वार्टर मरम्मत, खेल-कूद, और सड़कों की स्थिति जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई। श्रमिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने मजदूरों की समस्याओं को प्रबंधन के समक्ष रखा और उनके समाधान हेतु विभिन्न सुझाव दिए। महाप्रबंधक कल्याणजी प्रसाद ने श्रमिकों के कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को कल्याणकारी कार्यों को ससमय पूरा करने का निर्देश दिया। बैठक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन आशीष झा ने किया।

रजरप्पा कोयलांचल का दिव्यांग जितेंद्र पटेल को दिव्यांग रत्न से सम्मानित किया जाएगा

रजरप्पा दिव्यांग सह लारी गाँव निवासी जितेंद्र पटेल को उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में दिव्यांग रत्न अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा. जितेंद्र 6 दिसंबर गोमो जंक्शन से अयोध्या जंक्शन के लिए रवाना होंगे. 8 दिसंबर 11:00 बजे कार्यक्रम स्थान हनुमत निवास लक्ष्मण घाट अयोध्या में सम्मानित किया जाएगा.

चितरपुर प्रखंड सभागार में कानूनी जागरुकता शिविर का हुआ आयोजन

रजरप्पा जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से चितरपुर प्रखंड सभागार में कानूनी जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकारी लाभ पहुंचाना है। इस दौरान घरेलू हिंसा, दहेज, अपहरण, यौन उत्पीड़न, इन विषयों पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया. साथ ही सीडब्लूसी के बारे में बताया गया. वैसे बच्चे जो इधर-उधर काम करते हैं पढ़ाई नहीं कर पाते हैं वैसे बच्चे सीडब्लूसी में आवेदन कर सकते हैं। मौके पर कई अधिकारी सहित आंगनबाड़ी सेविका, ब्लॉक कर्मचारी और जेएसएलपीएस महिलाएं उपस्थित हुए.

झारखंड आंदोलनकारियों के निधन पर शोक सरकार मृत आंदोलनकारियों के आश्रितों को 10-10 लाख रु व सरकारी नौकरी दे -पुष्कर महतो

रांची झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा ने राज्य के विभिन्न जिलों के झारखंड आंदोलनकारी के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया है. रांची के बिलाल अंसारी , लोहरदगा के अयूब अंसारी , पूर्वी सिंहभूम मेघनाथ महतो ,एवं पाकुड़ के भूटन दत्ता के आकस्मिक निधन व कोल्हान के वरुण चक्रवर्ती के रेल में कटकर मर गए हैं. उक्त जानकारी देते हुए झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक पुष्कर महतो ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से गृह कारा आपदा प्रबंधन विभाग जांच अधिनियम 1952 के तहत राजकीय मान -सम्मान , अलग पहचान झारखंड आंदोलनकारियों के मृत्यु पर नहीं दिया जाना दुर्भाग्य की बात है. आज हजारों झारखंड आंदोलनकारी अस्वस्थ हैं, शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार -लाचार व तंगहाल जीवन जीने को विवस हैं . जिन्हें देखने वाला या शुद्ध लेने वाला कोई नहीं है. राज्य सरकार प्रत्येक झारखंड आंदोलनकारी के आश्रित परिवार को तत्काल 10-10 लाख रुपया एवं एक-एक सरकारी योग्यता के अनुसार नौकरी देकर कृतार्थ करें. राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 30 सितंबर को आंदोलनकारियों को लेकर चिंता व्यक्त कर चुके हैं लेकिन आज चिंता नहीं चिंतन करने की जरूरत है. अन्यथा आंदोलनकारी मरते- मरते एक दिन समाप्त प्रायः हो जाएंगे. आंदोलनकारी का इतिहास एवं स्मृति शेष रह जाएंगे. आंदोलनकारियों के निधन पर शोक व्यक्त करने वालों में अध्यक्ष विदेशी महतो, जितेंद्र सिंह कुशवाहा,युवा अध्यक्ष ललित नारायण, विश्वजीत प्रमाणिक मनबोध महतो ,रसराज महतो, इजहार राही, जबीरूल्लाह अंसारी, श्रीमती रोजलीन तिर्की ,श्रीमती सरोजिनी कच्छप, आसमान सुंडी अमर भेंगरा, दिनेश राम, जुबेर अंसारी, प्रमोद सोनी, सीताराम उरांव शुजात टोप्पो, महमूद आलम प्रवीन मेहता आदि प्रमुख हैं.

बिटकॉइन पहली बार 1 लाख डॉलर पारः भारतीय रुपए में इसकी कीमत 86.91 लाख रुपए हुई

नई दिल्ली दुनिया की सबसे बड़ी क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन की कीमत पहली बार 1 लाख डॉलर के पार निकल गई है। आज यानी 5 दिसंबर को बिटकॉइन 7% से ज्यादा बढ़कर रिकॉर्ड उच्च स्तर 102,585 डॉलर (86.91 लाख रुपए) पर पहुंच गया है। पिछले महीने डोनाल्ड ट्रम्प की अमेरिकी चुनाव जीत के बाद बिटकॉइन में लगातार तेजी देखने को मिल रही है। **1 साल में 118% बढ़ा बिटकॉइन का प्राइस** बीते 1 साल में साल बिटकॉइन के प्राइस में 118% की बढ़ोतरी देखी गई है। एक साल पहले यानी 6 दिसंबर 2023 को ये 43,494 डॉलर (36.85 लाख रुपए) पर था, जो अब 102,585 डॉलर (86.91 लाख रुपए) पर पहुंच गया है। एक्सपर्ट्स के अनुसार आने वाले दिनों में भी बिटकॉइन की कीमत में तेजी देखने को मिल सकती है। क्रिप्टोकरेंसी से होने वाली कमाई पर अब 30% टैक्स भारत में क्रिप्टोकरेंसी से होने वाली कमाई पर 30% टैक्स देना होगा। इसके अलावा क्रिप्टोकरेंसी से ट्रांजैक्शन करने पर 1% का TDS भी लगेगा। वहीं किसी को क्रिप्टोकरेंसी गिफ्ट करने पर भी 30% टैक्स चुकाना होता है।

क्या है क्रिप्टो करेंसी? क्रिप्टो करेंसी ऑनलाइन भुगतान का एक तरीका है। इसका इस्तेमाल गुड्स और सर्विसेज का पेमेंट करने के लिए किया जाता है। क्रिप्टो करेंसी नेटवर्क बेस्ड डिजिटल करेंसी है। इसे कंपनी या इंडिविजुअल कोई भी टोकन के रूप में जारी कर सकता है। इन टोकन्स का यूज जारी करने वाली कंपनी के गुड्स और सर्विसेज खरीदने के लिए ही होता है। इसे किसी एक देश के करेंसी की तरह कंट्रोल नहीं किया जा सकता है। इसका पूरा ऑपरेशन ऑनलाइन होता है, जिसके चलते इसमें उतार चढ़ावा होता रहता है। दुनिया की पहली क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन को 2009 में ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के तौर पर रिलीज किया गया था। इसे बनाने वाले ग्रुप को सातोशी नाकामोतो के नाम से जाना जाता है।

इंडिगो दुनिया की सबसे खराब एयरलाइन्स में से एकः यूरोपीयन एजेंसी ने टॉप 109 में 103वें नंबर पर रखा, कंपनी ने मेथड पर सवाल उठाए

नई दिल्ली मार्केट शेयर के लिहाज से भारत की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो को दुनिया की सबसे खराब एयरलाइन्स की लिस्ट में शामिल किया गया है। यूरोपियन एयर पैसेंजर क्लेम प्रोसेसिंग एंड फैसिलिटेटिंग एजेंसी ने अपने सर्वे में 109 एयरलाइन्स को शामिल किया, जिसमें इंडिगो को 103वें स्थान पर जगह दी है। एयरहेल्प इंटरनेशनल एयरलाइन्स और एयरपोर्ट्स की सालाना रैंकिंग जारी करता है। इसके लिए तीन क्राइटेरिया हैं- ऑन टाइम परफॉर्मेंस, कस्टमर ओपिनियन, और कॉम्पन्सेशन क्लेम की प्रोसेसिंग। एयरहेल्प के अनुसार, तीनों क्राइटेरिया एयरलाइन का स्कोर तय करने में समान रूप से योगदान करते हैं। यानी स्कोरिंग इसमें हर एक की हिस्सेदारी 33.33% है।

एअर इंडिया को 61वां स्थान मिला, इसका स्कोर 6.15 अपनी 2024 की रिपोर्ट में एयरहेल्प ने इंडिगो को 4.80 का स्कोर दिया। लिस्ट में एकमात्र अन्य भारतीय एयरलाइन एअर इंडिया है, जिसे 6.15 मिला है और 61वें स्थान पर है। ब्रुसेल्स एयरलाइंस को इस लिस्ट में टॉप पर रखा गया है, उसके बाद कतर एयरवेज और यूनाइटेड एयरलाइंस को 8.12, 8.11 और 8.04 के स्कोर के साथ दूसरे और तीसरे स्थान पर रखा गया है।

इंडिगो ने रैंकिंग के तरीके पर सवाल उठाया हालांकि इंडिगो ने एयरहेल्प रैंकिंग पर इसे तैयार की जाने वाली मेथडोलॉजी और प्रोसेस पर सवाल किया है। एयरलाइन ने कहा, 'भारत का एविएशन रेगुलेटर DGCA यानी डायरेक्टर जनरल ऑफ सीविल एविएशन एयरलाइन की पंक्चुअलिटी और कस्टमर्स कम्प्लेंट के आधार पर मंथली रिपोर्ट जारी करता है। इसमें इंडिगो लगातार सबसे कम शिकायत और पंक्चुअलिटी के लिए टॉप रैंक स्कोर करती रही है। एयरहेल्प की ओर से सर्वे में पब्लिश की गई डेटा भारत से सेंपल साइज लिए जाने की जानकारी नहीं दी गई है और ना ही इसे तैयार करने के तरीकों और ग्लोबल एविएशन इंडस्ट्री के गाइडलाइन को ध्यान में रखा गया है। इसलिए इस रिपोर्ट के विश्वसनीयता पर संदेह होता है।'

210 में मिलेगी हर महीने 5 हजार पेंशनःअटल पेंशन योजना से रिटायमेंट को दें वित्तीय सुरक्षा, जानें इस स्कीम से जुड़ी खास बातें

नई दिल्ली अगर आप रिटायरमेंट के बाद अपने लिए पेंशन इंतजाम करना चाहते हैं तो अटल पेंशन योजना (APY) आपके लिए सही ऑप्शन साबित हो सकते है। अटल पेंशन योजना के तहत 60 साल का होने पर हर महीने 1,000 से लेकर 5,000 रुपए की पेंशन मिलती है। इस स्कीम में हर महीने 210 रुपए जमा करके 5 हजार रुपए महीना पेंशन का इंतजाम कर सकते हैं। ऐसे में इस योजना के जरिए आप अपने बुढ़ापे को आर्थिक सुरक्षा दे सकते हैं। आज हम आपको इस योजना के बारे में बता रहे हैं, ताकि आप भी इसमें निवेश करके अपने लिए पेंशन का इंतजाम कर सकें।

20 साल के लिए करना होता है निवेश अटल पेंशन योजना के तहत 60 साल का होने पर हर महीने 1000 से लेकर 5000 रुपए की पेंशन मिलती है। इसमें 18 साल से 40 साल तक का व्यक्ति इसमें निवेश कर सकता है। कोई शख्स इस स्कीम को लेता है तो उसे कम से कम 20 साल निवेश करना होगा।

आपकी पेंशन के हिसाब से तय होगा निवेश का अमाउंट इस योजना में निवेश के लिए आपके अमाउंट से कितना कटेगा यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप रिटायरमेंट के बाद कितनी पेंशन चाहते हैं। 1 से 5 हजार रुपए प्रतिमाह पेंशन लेने के लिए सब्स्क्राइबर को 42 से लेकर 210 रुपए प्रतिमाह तक भुगतान करना होगा। यह 18 साल की उम्र में स्कीम लेने पर होगा। वहीं, यदि कोई सब्स्क्राइबर 40 साल की उम्र में स्कीम लेता है तो उसे 291 से लेकर 1,454 रुपए प्रतिमाह तक का कॉन्ट्रीब्यूशन करना होगा। सब्स्क्राइबर जितना ज्यादा कॉन्ट्रीब्यूशन करेगा, उसे रिटायरमेंट के बाद उतनी ही ज्यादा पेंशन मिलेगी।

अगर 18 साल का कोई व्यक्ति हर महीने... 42 रुपए जमा करें, तो उसे 60 साल के बाद हर महीने 1000 रुपए पेंशन मिलेगी।

84 रुपए जमा करें, तो 2000 रुपए पेंशन मिलेगी। 126 रुपए जमा करें, तो 3000 रुपए पेंशन मिलेगी।

168 रुपए जमा करें, तो 4000 रुपए पेंशन मिलेगी। 210 रुपए जमा करें, तो 5000 रुपए पेंशन मिलेगी।

अगर 40 साल का कोई व्यक्ति हर महीने... 291 रुपए जमा करे, तो उसे 60 साल के बाद हर महीने 1000 रुपए पेंशन मिलेगी। 582 रुपए जमा करे, तो 2000 रुपए पेंशन मिलेगी। 873 रुपए जमा करे, तो 3000 रुपए पेंशन मिलेगी। 1164 रुपए जमा करे, तो 4000 रुपए पेंशन मिलेगी। 1454 रुपए जमा करे, तो 5000 रुपए पेंशन मिलेगी। 19 से 39 साल के लोगों के लिए भी अलग-अलग अमाउंट तय किया गया है, आप इसे ऑनलाइन या बैंक जाकर पता कर सकते हैं।

अपनी सुविधा के हिसाब से दे सकते हैं किस्त इस योजना के तहत इन्वेस्टर्स मंथली, क्वाटरली या सेमी-एनुअल यानी 6 माह की अवधि में निवेश कर सकते हैं। कॉन्ट्रीब्यूशन ऑटो-डेबिट हो जाएगा, यानी आपके अकाउंट से तय राशि अपने आप कट जाएगी और आपके पेंशन खाते में जमा हो जाएगी। सब्स्क्राइबर की मृत्यु के बाद उसके जीवनसाथी को मिलेगी पेंशन सब्स्क्राइबर की मृत्यु के बाद उसके स्पाउस (जीवनसाथी) को समान पेंशन का भुगतान किया जाएगा और सबस्क्राइबर और स्पाउस दोनों के निधन पर 60 साल की आयु तक जमा की गई पेंशन राशि नॉमिनी को वापस कर दी जाएगी। वहीं अगर 60 साल से पहले ग्राहक की मृत्यु के मामले में उसका जीवनसाथी APY खाते में योगदान जारी रख सकता है। ग्राहक का पति या पत्नी वही पेंशन राशि प्राप्त करने का हकदार होगा जो ग्राहक को मिलनी थी। वहीं अगर वो चाहे तो ऐसा न करके APY खाते में जमा पूरा पैसा निकाल सकता है।

टैक्सपेयर को नहीं मिलता योजना का लाभ अटल पेंशन योजना टैक्सपेयर्स के लिए नहीं है। यानी की अगर आप इनकम टैक्स चुकाते हैं तो इस योजना में अकाउंट नहीं खोल सकेंगे। ये नियम सरकार ने 1 अक्टूबर 2022 से लागू किया है।

जियो-हॉटस्टार वेबसाइट का डोमेन अब वायकॉम 18 के पासः दुबई के बच्चों ने दिया, दिल्ली के एप डेवलपर ने खरीदा था

मुंबई जियो हॉटस्टार वेबसाइट (jiohotstar.com) डोमेन को रिलायंस के स्वामित्व वाली वायाकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड को ट्रांसफर कर दिया गया है। अपडेटेड WHOIS रिकॉर्ड इसकी पुष्टि करता है कि वायाकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड डोमेन का नया मालिक है। यह डोमेन भारत की दो सबसे बड़ी एंटरटेनमेंट और टेलीकॉम कंपनी रिलायंस जियो और डिज्नी+ हॉटस्टार की मर्जर ब्रांडिंग से जुड़ा हुआ है। दरअसल, दिल्ली के एक एप डेवलपर ने जियो हॉटस्टार डोमेन को खरीद लिया था और उसने डोमेन देने के बदले रिलायंस से £93,345 (लगभग 94 लाख रुपए) की मांग रखी थी। रिलायंस की ओर से मांग नहीं मानने पर उस डेवलपर ने डोमेन को दुबई में रहने वाले दो बच्चों को बेच दिया था। उसके बाद दोनों बच्चों ने कहा था कि वह इस डोमेन को रिलायंस जियो को फ्री में ट्रांसफर कर देंगे, उनको इसके लिए कोई पैसा नहीं चाहिए। ऐप डेवलपर ने डोमेन को 2023 में खरीदा था जब जियोसेनेमा-हॉटस्टार के मर्जर की बातचीत ही शुरू हुई थी।

2 दिसंबर का लास्ट बार अपडेट हुआ था डोमेन का WHOIS डेटा WHOIS डेटा से भी पता चला है कि डोमेन का स्वामित्व मुकेश अंबानी के स्वामित्व वाली वायकॉम 18 के पास है, जो 20 सितंबर, 2023 को पंजीकृत है और 20 सितंबर, 2026 तक वैध है, जिसका अंतिम अपडेट 2 दिसंबर, 2024 को दर्ज किया गया है। jiohotstar.com के लिए रजिस्ट्रार, प्रशासनिक और तकनीकी संपर्क मनीष पेनुली के रूप में सूचीबद्ध है, जो वायकॉम 18 मीडिया प्राइवेट लिमिटेड का प्रतिनिधित्व करते हैं।

20 दिन पहले रिलायंस-डिज्नी का हुआ है मर्जर 20 दिन पहले 14 नवंबर को डिज्नी स्टार इंडिया और रिलायंस के वॉयकॉम-18 का मर्जर हुआ है। इसमें डिज्नी हॉटस्टार और जियो सिनेमा भी शामिल हैं। इस मर्जर के बाद ये देश का सबसे बड़ा एंटरटेनमेंट नेटवर्क बन गया है। डिज्नी-रिलायंस एंटरटेनमेंट के पास अब 2 ओवर द टॉप यानी, OTT और 120 चैनल के साथ 75 करोड़ दर्शक हो गए हैं। रिलायंस ने इस जॉइंट वेंचर के लिए 11,500 करोड़ रुपए का निवेश किया है। मर्जर की प्रोसेस बीते करीब एक साल से चल रही थी। दोनों कंपनियों ने बयान जारी करते हुए कहा था- 'ये डील 70,352 करोड़ रुपए में हुई है। मर्जर के बाद बनी कंपनी में रिलायंस की 63.16% और डिज्नी की 36.84% हिस्सेदारी होगी। इस नई कंपनी की चेयरपर्सन नीता अंबानी होंगी। वाइस चेयरपर्सन उदय शंकर होंगे। ये कंपनी को स्ट्रैटेजिक गाइडेंस देंगे।

डोमेन क्या होता है? इंटरनेट की दुनिया में डोमेन एक वेबसाइट का पता होता है, जिसका इस्तेमाल वेबसाइट को इंटरनेट तक पहुंचाने के लिए किया जाता है। यह वेबसाइट का यूनिक आईडेंटिफायर भी होता है, जिससे यूजर वेब ब्राउज करके वेबसाइट तक पहुंचा सकते हैं। डोमेन के दो भाग होते हैं। इसमें एक टॉप-लेवल डोमेन (TLD) और दूसरा सेकेंड-लेवल डोमेन (SLD) होता है। TLD - यह डोमेन के सबसे ऊपरी हिस्से को कहता है और यह वेबसाइट के टाइप या संबंधित रिपब्लिक का पता बताता है। जैसे- .com (कॉमर्शियल), .org (संगठन), .net (नेटवर्क), .gov (सरकार) और .edu (शैक्षिक) आदि।

SLD - यह टॉप-लेवल डोमेन के नीचे आता है और वेबसाइट का स्पेशल नाम होता है। उदाहरण के लिए, bhaskar एक SLD है, जब bhaskar.com की बात होती है।

जियो-हॉटस्टार वेबसाइट का डोमेन अब वायकॉम 18 के पासः दुबई के बच्चों ने दिया, दिल्ली के एप डेवलपर ने खरीदा था

टाटा ग्रुप देश का सबसे बड़ा औद्योगिक घराना है। पिछले साल इसकी कंपनी टाटा टेक्नोलॉजीज का आईपीओ आया था। टाटा ग्रुप का यह 19 साल में पहला आईपीओ था। टाटा ग्रुप की एक और कंपनी आईपीओ लाने की तैयारी में है। जानिए क्या करती है यह कंपनी और अब आएगा उसका आईपीओ...

नई दिल्लीः टाटा ग्रुप की एक और कंपनी कंपनी टाटा प्रोजेक्ट्स की अगले 12 से 18 महीनों में लिस्टिंग हो सकती है। इस इंजीनियरिंग, खरीद और निर्माण (EPC) कंपनी को पिछले फाइनेंशियल ईयर में 81.97 करोड़ का नेट प्रॉफिट हुआ था जबकि उससे पिछले साल 855.65 करोड़ का घाटा हुआ था। लेकिन कंपनी को उम्मीद है कि लिस्टिंग तक वह फाइनेंशिली फिट हो जाएगी। टाटा प्रोजेक्ट्स में टाटा संस बहुसंख्यक शेयरधारक है। उसके पास 31 मार्च, 2024 तक कंपनी में 57.31% हिस्सेदारी थी। टाटा प्रोजेक्ट्स के अन्य शेयरधारकों में टाटा पावर (30.81%), टाटा केमिकल्स (6.16%), वोल्टास (4.30%) और टाटा इंडस्ट्रीज (1.42%) शामिल हैं। पिछले साल टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा टेक्नोलॉजीज लिस्ट हुई थी। यह 19 साल में टाटा ग्रुप का पहला आईपीओ थी। इससे पहले 2004 में TCS की लिस्टिंग हुई थी।

टाटा प्रोजेक्ट्स के एमडी और सीईओ विनायक पई ने ईटी को बताया कि कंपनी का 12-18 महीने में फिट बनने का लक्ष्य है। यह नकदी के बारे में है और अगर हम अपने राजस्व पर 4-5% नकदी उत्पन्न करने में सक्षम हैं, तो यह वास्तव में फिटनेस का उच्चतम मीट्रिक है। हालांकि ऐसा कोई सख्त लक्ष्य नहीं है कि आप ऐसा करें और फिर हम सूचीबद्ध होंगे। यह फिट होने के बारे में है। उन्होंने कहा कि यह शेयरधारकों का विशेषाधिकार है। कंपनी के बड़े प्रोजेक्ट्स में नया संसद भवन और मुंबई का अटल सेतु शामिल हैं। कंपनी के 20% से अधिक प्रोजेक्ट टाटा ग्रुप की कंपनियों टीसीएस, टाटा पावर, इंडियन होटल्स, टाटा स्टील और टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स से जुड़े हैं।

कंपनी का प्रदर्शन पई ने कहा कि कंपनी आगे चलकर सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा, सौर, डेटा सेंटर और हरित ईंधन जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेगी। रेटिंग फर्म क्रिसिल के अनुसार जून 2024 तक टाटा प्रोजेक्ट्स के पास लगभग 44,000 करोड़ का ऑर्डरबुक था। इसमें से लगभग 90% बकाया ऑर्डर भारत से थे। पई ने कहा, 'हम योजना और पुनर्निर्माण के चरण में थे। हम स्थिर होना चाहते थे, इसलिए नया काम लेने में आक्रामक नहीं थे। अब जब हमारे पास बेहतर बैंडविड्थ और बेहतर क्षमता है, तो हम ऑर्डर के मामले में और अधिक आक्रामक हो रहे हैं। 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष में कंपनी की इनकम 17,761 करोड़ और 81.97 करोड़ का नेट प्रॉफिट हासिल किया था। उससे पिछले वर्ष कंपनी को 855.65 करोड़ का घाटा हुआ था। पई ने कहा कि कंपनी को निजी क्षेत्र से अधिक ऑर्डर मिल रहे हैं और इससे अगले पांच वर्षों में इसका रेवेन्यू मिक्स निजी क्षेत्र के पक्ष में 70:30 हो सकता है।

228850000000... दुनिया का सबसे बड़ा बैंक फ्रॉड, वियतनाम की महिला टायकून ने कैसे दिया इसे अंजाम?

वियतनाम में दुनिया का सबसे बड़ा बैंक फ्रॉड सामने आया है। इस मामले में एक महिला कारोबारी को मौत की सजा सुनाई गई है। यह फ्रॉड करीब 23 हजार करोड़ रुपये का है। इस महिला ने बैंक अधिकारियों के साथ मिलकर इस फ्रॉड को अंजाम दिया था। यह महिला फर्जी डॉक्यूमेंट्स पर बैंक से लोन लेती थी।

नई दिल्लीः भारत समेत दुनिया के कई देशों में करोड़ों-अरबों रुपये के बैंक फ्रॉड सामने आए हैं। वियतनाम के बैंक फ्रॉड को दुनिया का सबसे बड़ा बैंक फ्रॉड माना जा रहा है। यह घोटाला 22,885 करोड़ रुपये का है। इस घोटाले में वियतनाम की 68 साल की महिला कारोबारी ट्रुओंग माई लैन (Truong My Lan) का नाम सामने आया है। इस बैंक फ्रॉड की साजिश रचने के आरोप में माई को मौत की सजा सुनाई गई है। माई ने मौत की सजा को लेकर अपील की थी जिसे कोर्ट ने ठुकरा दिया और मौत की सजा को बरकरार रखा। माई प्रॉपर्टी का कारोबार करती हैं। उनके इस फ्रॉड से वियतनाम के हजारों आम नागरिक प्रभावित हुए। यह केस 10 साल से ज्यादा समय से चल रहा था। हालांकि माई के पास इस सजा से बचने का रास्ता भी है। वियतनामी कानून के तहत माई अगर फ्रॉड की रकम का 75 फीसदी हिस्सा चुका देती हैं तो उनकी मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदला जा सकता है। **क्या है पूरा मामला?** माई अपनी मां के साथ मार्केट में ब्यूटी प्रोडक्ट बेचती थीं। साल 1986 में उन्होंने वियतनाम के आर्थिक सुधारों का लाभ उठाया और अपने कारोबार को बढ़ाया। 1990 के दशक तक उन्होंने होटलों और रेस्टोरेंट खोल लिए। साल 1992 में माई ने वैन थिन्ह फाट (VTP) कंपनी की स्थापना की और इसकी अध्यक्ष बन गईं। इसके बाद उन्होंने वियतनाम के रियल एस्टेट बाजार में कदम रखा और समय के साथ उनका प्रभाव बढ़ता गया।

कैसे सामने आया फ्रॉड?

अक्टूबर 2022 में माई की गिरफ्तारी उनकी धोखाधड़ी सामने आने लगीं। जांच में पता चला कि वह शेल कंपनियों और बिचौलियों के जरिए वियतनाम के पांचवें सबसे बड़े साइगॉन कमर्शियल बैंक (SCB) को कंट्रोल करती थीं। यह बैंक लोन देने वाले सबसे बड़े बैंकों में शामिल है। दस वर्षों में माई ने करीब फर्जी तरीके से लोन के लिए आवेदन किए और 12.5 बिलियन डॉलर की रकम हड़प ली। यह फ्रॉड बढ़कर 27 बिलियन डॉलर (करीब 23 हजार करोड़ रुपये) हो गया। यह उस समय वियतनाम की जीडीपी का लगभग 3% था। माई के इस फ्रॉड से हजारों निवेशकों को अपनी रकम से हाथ धोना पड़ा। यह फ्रॉड सामने आने के बाद वियतनाम में राजनीतिक प्रदर्शन भी हुए थे। **लोन के लिए दी रिश्वत** जांच में सामने आया कि माई ने लोन पाने के लिए बैंक अधिकारियों को मोटी रकम रिश्वत के रूप में दी थी।

चांदी 1,065 महंगी होकर 91,090 प्रति किलो हुईःसोना 146 बढ़कर 76,538 पर पहुंचा, कैरेट के हिसाब से देखें गोल्ड की कीमत

नई दिल्ली सोने-चांदी के दाम में आज यानी 5 दिसंबर को बढ़त देखने को मिली है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन (IBJA) के अनुसार, 10 ग्राम 24 कैरेट गोल्ड का भाव 146 रुपए बढ़कर 76,538 रुपए पर पहुंच गया है। इससे पहले सोने की कीमत 76,392 रुपए प्रति दस ग्राम थी। चांदी के दाम में भी तेजी है। ये 1,065 रुपए बढ़कर 91,090 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई। इससे पहले चांदी 90,025 रुपए पर थी। वहीं, 23 अक्टूबर को चांदी ने 99,151 रुपए का और 30 अक्टूबर को सोने ने 79,681 रुपए का ऑल टाइम हाई बनाया था। 4 महानगरों और भोपाल में सोने की कीमत दिल्लीः 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 71,550 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 78,040 रुपए है। मुंबईः 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 71,400 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 77,890 रुपए है। कोलकाताः 10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 71,400 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 77,890 रुपए है। चेन्नईः 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 71,400 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 77,890 रुपए है।

भोपालः 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 71,450 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 77,940 रुपए है। केडिया एडवाइजरी के डायरेक्टर अजय केडिया कहते हैं कि एक बड़ी रैली के बाद सोने में गिरावट आनी थी, वह आ चुकी है। अमेरिका के बाद UK ने ब्याज दरों में कटौती की है। इससे गोल्ड ETF की खरीदारी बढ़ेगी। ऐसे में अगले साल 30 जून तक सोना 85 हजार रुपए प्रति 10 ग्राम तक पहुंच सकता है।

सीरिया में रूसी नौसैनिक अड्डे पर कब्ज़ा कर सकते हैं HTS विद्रोही, पुतिन ने तेज की मिसाइलों की बारिश, युद्धपोत हटा रहे

रूस की सेना ने सीरिया में मिसाइल हमला तेज कर दिया है। तुर्की के समर्थन वाले एचटीएस विद्रोही रूसी नौसेनिक बेस टार्टस पर हमला कर सकते हैं। इस बीच सीरिया की सेना ने रूसी सेना की मदद से पलटवार किया है और एचटीएस के हामा शहर पर हमले को वफिल किया है।

दमिश्कः यूक्रेन के बाद अब सीरिया में रूसी सेना को जोरदार लड़ाई में लड़ना पड़ रहा है। अलेप्पो पर कब्ज़ा करने के बाद हयात तहरीर अल शाम यानि एचटीएस के विद्रोही रणनीतिक शहर हामा की ओर बढ़ रहे हैं। इसके बाद एचटीएस विद्रोहियों के निशाने पर टार्टस है जहां पर रूस की सेना ने अपना नौसैनिक अड्डा बना रखा है। इस बड़े खतरे को देखते हुए अब रूसी सेना ने सीरिया के अंदर से ही इस नौसैनिक बेस से मिसाइलों की बारिश शुरू कर दी है। वहीं सीरिया की सेना भी विद्रोहियों को पीछे ढकेलने के लिए जवाबी हमले कर रही है। तुर्की समर्थति विद्रोही कभी भी खमेइमिम एयरबेस पर कब्ज़ा कर सकते हैं। इस एयरबेस को साल 2015 में सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल असद ने रूस को दे दिया था।

इसके बाद सीरिया के गृहयुद्ध में असद सरकार को रूस की मदद से बढ़त मिल गई थी। हामा सीरिया का चौथा सबसे बड़ा शहर है। बुधवार को रूसी सेना ने जोरदार हवाई हमला बोला और इसके बाद सीरिया की सेना ने विद्रोहियों को 10 किमी पीछे ढकेल दिया। सीरिया की राजधानी दमिश्क की सुरक्षा के लिए हामा पर असद सेना का कब्ज़ा जरूरी है। यही नहीं हामा ही तटीय शहरों टार्टस और लटाकिया का प्रवेश द्वार है। हामा में रूसी सेना का नौसैनिक बेस मौजूद है। एचटीएस के अलावा इस लड़ाई में उसे तुर्की के समर्थन वाले सीरियाई मलिशिया सीरियन नेशनल आर्मी का भी साथ मिला हुआ है।

रूस के लिए क्यों अहम है सीरियाई नेवल बेस इस बीच संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत गैर पेडेर्सन ने कहा कि हजारों की तादाद में आम नागरिक इस लड़ाई की वजह से विस्थापित हुए हैं। रूसी नौसेना के इस बेस पर जब से खतरा मंडराया है, रूस ऐक्शन में आ गया है। उसने बचाव के कदम के तहत अपने 5 युद्धपोतों और एक किलो क्लास की सबमरीन को यहां से निकाल लिया है। दो दिसंबर को टार्टस से येलन्या युद्धपोत रवाना हुआ। इस हमले के बाद पुतिन के करीबी राष्ट्रपति असद बैकफुट पर हैं। वहीं वद्रिोहियों की नजर अब राजधानी दमिश्क पर है।

विश्लेषकों का कहना है कि अगर रूस सीरिया से अपने युद्धपोतों को हटा रहा है तो इसका मतलब है कि वह सीरियाई सरकार की ज्यादा मदद नहीं कर पाएगा। उन्होंने कहा कि सीरिया में खराब होते हालात की वजह से रूस को यह कदम उठाने के लिए मजबूर होना पड़ा है। टार्टस नेवल बेस रूस के लिए बहुत अहम था। रूसी सेना इस नेवल बेस पर साल 1971 से अपना कब्ज़ा बनाए हुए है। साल 2012 में सीरिया में गृहयुद्ध शुरू होने के बाद इस नेवल बेस का महत्व काफी बढ़ गया। यह रूस का वदिेश में सबसे बड़ा नौसैनिक बेस है। यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद नाटो को जवाब देने के लिए भी रूस इस नेवल बेस का इस्तेमाल कर रहा था।

क्या शेख हसीना को प्रत्यर्पित करेगा भारत? अगले हफ्ते बांग्लादेश जा रहे भारतीय विदेश सचिव!

बांग्लादेश की अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग के बीच भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिसरी अगले हफ्ते ढाका जा सकते हैं। वह ढाका में अपने बांग्लादेशी समकक्ष के साथ निर्धारित विदेश सचिव स्तर की वार्ता में हिस्सा लेंगे। बांग्लादेश ने कहा है कि वह शेख हसीना के प्रत्यर्पण का मुद्दा उठाएगा।

ढाकाः मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार बनने के बाद दोनों देशों में तनाव के बीच भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिसरी अगले सप्ताह विदेश सचिव स्तर की बैठक के लिए बांग्लादेश का दौरा कर सकते हैं। सरकारी समाचार एजेंसी बीएसएस के अनुसार, विदेश मामलों के सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन ने कहा कि बांग्लादेश और भारत के बीच निर्धारित विदेश सचिव स्तरीय वार्ता 9 या 10 दिसंबर को ढाका में होगी।

यूनुस सरकार में बड़े भारतीय अधिकारी का पहला दौरा शेख हसीना को प्रधानमंत्री पद से हटाए जाने के बाद आठ अगस्त को अंतरिम सरकार बनने के बाद यह किसी वरिष्ठ भारतीय सरकारी अधिकारी की बांग्लादेश की पहली उच्चस्तरीय यात्रा होगी। हुसैन ने यहां विदेश मंत्रालय में संवाददाताओं से कहा, "यह बिलकुल स्पष्ट है कि हम (भारत के साथ) अच्छे संबंध चाहते हैं।" हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बांग्लादेश और भारत के बीच संबंध पारस्परिक आधार पर होने चाहिए। **बांग्लादेशी विदेश सचिव के साथ होगी बैठक** उन्होंने कहा, "दोनों पक्षों को इसकी जरूरत है और इसके लिए काम करना चाहिए।" हुसैन ने कहा कि यद्यपि विदेश सचिव स्तर की वार्ता 10 दिसंबर को आयोजित की जानी है, लेकिन यह एक दिन पहले नौ दिसंबर को भी आयोजित की जा सकती है। समाचार एजेंसी ने बताया कि उच्चस्तरीय वार्ता के दौरान विदेश सचिव मोहम्मद जशीम उद्दीन और भारतीय विदेश सचिव मिसरी अपने-अपने प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगे। **हसीना के प्रत्यर्पण का मुद्दा उठाएगा बांग्लादेश** समाचार एजेंसी के अनुसार, चर्चा में हसीना के संभावित प्रत्यर्पण और वीजा संबंधी मामलों समेत कई द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा होने की उम्मीद है। जुलाई-अगस्त में हुए विद्रोह के दौरान सामूहिक हत्याओं में कथित संलिप्तता को लेकर हसीना बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण में मुकदमे का सामना कर रही हैं।बांग्लादेश और भारत के बीच पांच अगस्त को तनाव बढ़ गया था, जब हसीना देश छोड़कर भारत चली गई थीं। पिछले सप्ताह हिंदू संत चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी के बाद यह तनाव और बढ़ गया।

सीरिया में रूसी नौसैनिक अड्डे पर कब्जा कर सकते हैं HTS विद्रोही, पुतिन ने तेज की मिसाइलों की बारिश, युद्धपोत हटा रहे

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बीते नवम्बर में देश के नए हाइपरसोनिक हथियार के बारे में जानकारी दी थी। उन्होंने दावा किया था कि रूस की नई मिसाइल ओरेशनिक का मुकाबला करने के लिए पश्चिमी देशों के पास कोई हथियार नहीं है। अब इस मिसाइल के बारे में चौंकाने वाला खुलासा हुआ है।

मॉस्कोः रूस ने नवम्बर में यूक्रेन के निप्रो शहर पर परमाणु हमला करने में सक्षम मध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल 'ओरेशनिक' दागी थी। रूसी राष्ट्रपति ने इस मिसाइल को हाइपरसोनिक श्रेणी की बताया था, जिसकी 'दुश्मन के पास कोई काट नहीं' है। इसके साथ ही उन्होंने कीव को धूल में मिलाने की धमकी दी थी। हालांकि, ब्रिटिश मीडिया आउटलेट द सन ने रूस के अंदरूनी सूत्रों के हवाले से दावा किया है कि ओरेशनिक नाम का ये नया सुपर हथियार काफी हद तक पश्चिम को डराने के लिए एक प्रचार मात्र है। रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने हमले के बाद इस बारे में जानकारी देते हुए अपने नए हथियार की जमकर तारीफ की थी और ओरेशनिक मिसाइलों के अपने शस्त्रागार में बढ़ाने की बात कही है। लेकिन रूस के अंदरूनी सूत्रों ने इस दावे की धज्जियां उड़ाई हैं और कहा है कि ओरेशनिक का डर दिखाना असल में पुतिन और उनके समर्थकों का एक झूठा दावा है। ***पुतिन ने किया झूठा दावा?*** *द सन ने मॉस्को टाइम्स की एक रिपोर्ट का हवाला दिया है जिसमें चार अंदरूनी सूत्रों ने बताया है कि इस हथियार का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाने और कीव को नष्ट करने के लिए लगभग असंभव है। रिपोर्ट के अनुसार, रूसी सूत्रों ने खुलासा किया है कि यह रूस का एक क्लासिक सैन्य प्रचार अभियान है, जिसे रूसी डिफेंस इंडस्ट्री को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने के लिए डिजाइन किया गया है।* ***अमेरिका और ब्रिटेन को डराने की कोशिश*** *रूसी शासन में इस बात पर विचार किया गया कि अमेरिका और ब्रिटेन ने यूक्रेन को रूस के खिलाफ लंबी दूरी की मिसाइलों के इस्तेमाल की मंजूरी दी है, उसका जवाब देने की जरूरत है। यूरोप को डराया जाए ताकि वे दोबारा ऐसा न करें। एक अन्य रूसी अधिकारी ने बताया कि यह सिर्फ एक शो था और इसके कई एपिसोड थे, जिन्हें मंचित किया गया और जनता के सामने पेश किया गया।*

पाकिस्तान के इलाके में डूबा भारत का कार्गो शिप, 12 भारतीयों को पाकिस्तानी नेवी ने बचाया, ऐसे किया ऑपरेशन

पाकिस्तान ने भारतीय मालवाहक जहाज AL पिरानिपिर के डूबने के बाद उसके 12 सदस्यीय चालक दल को सफलतापूर्वक बचा लिया। पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी ने बुधवार को जारी बयान में बताया कि यह बचाव अभियान मुंबई स्थित समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (MRCC) से सहायता के अनुरोध पर शुरू किया गया।

इस्लामाबादः पाकिस्तान ने एक भारतीय जहाज के डूबने के बाद उसके क्रू की जान बचाई है। पाकिस्तान समुद्री सुरक्षा एजेंसी (PMSA) ने बुधवार को समुद्री बचाव अभियान का सफलतापूर्वक समन्वय किया। इसके जरिए भारतीय मालवाहक जहाज MSV AL पिरानिपिर के डूबने के बाद फंसे 12 लोगों को जीवित बचा लिया गया। बुधवार को जारी एक बयान में PMSA ने कहा कि समुद्री बचाव समन्वय केंद्र (MRCC) को भारत के मुंबई MRCC का ईमेल प्राप्त हुआ। इसमें डूबे हुए जहाज से बचे लोगों का पता लगाने और उन्हें बचाने के लिए सहायता का अनुरोध किया गया था। बयान के मुताबिक जहाज पाकिस्तान के विशेष आर्थिक क्षेत्र में डूब गया था और इसके चालक दल के 12 सदस्य संकट में फंस गए थे। जवाब में पाकिस्तान समुद्री एजेंसी ने कई एजेंसियों के साथ मिलकर बचाव अभियान शुरू किया। PMSA के एक जहाज को तुरंत जीवित बचे लोगों का पता लगाने का काम सौंपा गया। जबकि आसपास के वाणिज्यिक जहाजों को सतर्क कर दिया गया और बचाव में सहायता करने का अनुरोध किया गया। संयुक्त समुद्री सूचना समन्वय केंद्र ने सहयोग दिया, जिससे पाकिस्तानी नौसेना और PMSA दोनों ने जहाजों को हाई अलर्ट पर रखा। सबसे करीबी नौसेना जहाज को तुरंत घटनास्थल पर भेजा गया। इसके अलावा जीवित बचे लोगों को वापस लाने के लिए भारतीय तटरक्षक जहाज को विशेष आर्थिक क्षेत्र में एंट्री के लिए जरूरी व्यवस्थाएं की गईं।

सभी 12 लोगों को बचाया गया बयान में आगे कहा गया, 'त्वरित प्रतिक्रिया और प्रभावी समन्वय के परिणामस्वरूप भारतीय मालवाहक जहाज के सभी 12 लोगों को सफलतापूर्वक बचा लिया गया। जो अंतरराष्ट्रीय SAR दायित्वों को बनाए रखने और क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए PMSA की प्रतिबद्धता दिखाता है।' बयान में आगे कहा गया कि यह ऑपरेशन राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना समुद्र में इमरजेंसी स्थिति का जवाब देने में PMSA की तत्परता और पेशेवर विशेषज्ञता दिखाता है।

जेल में बंद ईरान की नोबेल विजेता नरगिस मोहम्मदी रिहाः3 हफ्ते की जमानत; हिजाब के खिलाफ बोलने पर 31 साल की सजा मिली है

तेहरान जेल में बंद ईरान की नोबेल विजेता महिला अधिकार कार्यकर्ता और पत्रकार नरगिस मोहम्मदी को 3 हफ्ते के लिए जमानत पर रिहा किया गया है। नरगिस नवंबर 2021 से जेल में बंद हैं। उन्हें ईरान की सरकार ने मृत्युदंड और हिजाब के खिलाफ अभियान चलाने के लिए गिरफ्तार किया था। नरगिस को 2023 में महिलाओं की आजादी और उनके हक की आवाज उठाने के लिए नोबेल का पीस प्राइज दिया गया था। नरगिस की रिहाई की जानकारी उनके वकील मुस्तफा नीली ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर पोस्ट कर दी है। पोस्ट में बताया गया है कि डॉक्टर्स की सलाह पर सरकार ने नरगिस की सजा को 3 हफ्ते के लिए निलंबित कर दिया है। साथ ही उन्हें रिहा भी कर दिया गया है। नरगिस की सिर्फ 3 हफ्ते की रिहाई पर उनके परिवार वालों और समर्थकों ने नाराजगी जताई है। नरगिस के परिवार ने कम से कम 3 महीने की रिहाई की मांग की है।

52 साल की नरगिस को 31 साल की सजा 52 साल की नरगिस को ईरान की इवान जेल में कैद रखा गया था। उन्हें 31 साल की जेल और 154 कोड़ों की सजा सुनाई थी। 2023 में नॉर्वे की राजधानी ओस्लो में नरगिस का परिवारजन उनका नोबेल प्राइज लेने पहुंचे थे। इसके बाद ईरान की सरकार ने नरगिस को 15 महीने की अतिरिक्त सजा सुनाई थी। नरगिस का जन्म कुर्दिस्तान ईरान के जंजन शहर में 21 अप्रैल 1972 में हुआ। उन्होंने फिजिक्स की पढ़ाई की थी। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने इंजीनियर के तौर पर काम किया। वो कॉलमनिस्ट भी रहीं। कई अखबारों के लिए लिखती थीं। 1990 के दशक से ही नरगिस महिलाओं के हक के लिए आवाज उठा रही थीं। 2003 में उन्होंने तेहरान के डिफेंडर्स ऑफ ह्यूमन राइट सेंटर में काम शुरू किया। नोबेल प्राइज की वेबसाइट के मुताबिक, नरगिस मोहम्मदी को जेल में बंद कार्यकर्ताओं और उनके परिवारों की सहायता करने की कोशिश करने के आरोप में पहली बार 2011 में जेल हुई थी। **8 साल से बच्चों से नहीं मिलीं नरगिस** पिछले साल जून में न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए एक इंटरव्यू में नरगिस ने कहा था कि उन्होंने 8 साल से अपने बच्चों को नहीं देखा है। उन्होंने आखिरी बार अपनी जुड़वा बेटियों अली और कियाना की आवाज एक साल पहले सुनी थी। नरगिस की दोनों बेटियां उनके पति तागी रहमानी के साथ फ्रांस में रहती हैं। दरअसल, तागी भी एक पॉलिटिकल एक्टिविस्ट हैं। जिन्हें ईरान की सरकार ने 14 साल जेल की सजा दी थी।

नरगिस ने एक किताब भी लिखी है, जिसका नाम व्हाइट टॉर्चर है। ईरानी हुकूमत की तमाम कोशिशों के बावजूद, मोहम्मदी की आवाज दबाई नहीं जा सकी। जेल में रहते हुए उन्होंने साथी कैदियों की तकलीफ को दर्ज करना शुरू किया। आखिरकार कैदियों से बातचीत के पूरे ब्योरे को उन्होंने व्हाइट टॉर्चर किताब में उतार दिया। 2022 में उन्हें रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (RSF) के साहस पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था।

ईरान के तेहरान में निर्वस्त्र होकर घूमने लगी छात्राःपुलिस ने हिरासत में पीटा; यौन उत्पीड़न के खिलाफ प्रोटेस्ट में उतरे थे कपड़े ईरान की राजधानी तेहरान में एक छात्रा के निर्वस्त्र होकर घूमने का मामला सामने आया है। न्यूज एजेंसी एएफपी के मुताबिक यह घटना शनिवार को तेहरान की आजाद यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड रिसर्च में हुई। यहां यूनिवर्सिटी की एक छात्रा ने यौन उत्पीड़न के खिलाफ प्रोटेस्ट में अपने कपड़े उतार दिए।

सिंगापुर में बुजुर्ग आबादी बढ़ी, लेबर पावर घटाः फर्टिलिटी रेट 0.97 पर पहुंची; एलन मस्क बोले- सिंगापुर गायब हो जाएगा

सिंगापुर सिटी दुनिया भर में कई देश लो फर्टिलिटी रेट से जूझ रहे हैं। सिंगापुर में तो फर्टिलिटी रेट 0.97 पर पहुंच गया है। जो जनसंख्या संतुलन बनाये रखने के लिए जरूरी 2.1 के फर्टिलिटी रेट से काफी कम है। एलन मस्क ने इसे लेकर ट्वीट करते हुए कहा कि सिंगापुर खत्म हो रहा है।

न्यूजवीक के मुताबिक, सिंगापुर में बढ़ती बुजुर्ग आबादी घटते श्रमिक और कम होते लेबर पावर की वजह से फैक्ट्रियों से लेकर फूड डिस्ट्रीब्यूशन तक में रोबोट का इस्तेमाल किया जा रहा है। 2030 तक सिंगापुर की 25% आबादी की उम्र 65 साल से ज्यादा होगी।

70 साल में दुनिया की फर्टिलिटी रेट में 50% गिरावट इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ रोबोटिक्स के मुताबिक, सिंगापुर में हर 10,000 कर्मचारियों पर रोबोट की संख्या 770 है। इस वजह से यहां हर जगह रोबोकॉप, रोबो-क्लीनर, रोबो-वेटर और रोबो-डॉग की भरमार हो गई है। 1970 के दशक तक, दक्षिण कोरिया, जापान और चीन जैसे देशों में एक महिला के औसतन पांच से ज्यादा बच्चे होते थे। अब इन देशों में औसतन एक महिला पर एक बच्चा भी नहीं है। पिछले 70 सालों में पूरी दुनिया में फर्टिलिटी रेट में 50% की गिरावट देखी गई है। सिंगापुर में कम आबादी की वजह से रोबोकॉप, रोबो-क्लीनर, रोबो-वेटर तैनात किए जा रहे हैं। सिंगापुर में कम आबादी की वजह से रोबोकॉप, रोबो-क्लीनर, रोबो-वेटर तैनात किए जा रहे हैं। दक्षिण कोरिया में बच्चे पैदा करने पर नकद कैश देने की स्कीम दक्षिण कोरिया, जापान और सिंगापुर में हालात काफी चिंताजनक है। दक्षिण कोरिया में तो फर्टिलिटी रेट कम होकर 0.72 हो गया है। जापान पहले ही दुनिया का सबसे तेजी से बूढ़ा होने वाला देश बन चुका है। दक्षिण कोरिया ने महिलाओं को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए कैश देने की स्कीम भी शुरू की है। सरकारी योजना के मुताबिक, 2022 के बाद से बच्चे पैदा करने वाली महिला को डिलीवरी से पहले का खर्च पूरा करने के लिए 1,850 अमेरिकी डॉलर (1,57,000 रुपए) का नकद बोनस मिलेगा।

फर्टिलिटी रेट यानी प्रजनन दर का मतलब क्या है? किसी भी देश, समाज या समूह की एक महिला अपने जीवनकाल में औसतन कितने बच्चों की मां बनती हैं, इसे उस देश, समाज या समूह का फर्टिलिटी रेट कहते हैं। जैसे यदि भारत की एक महिला अपने पूरे जीवनकाल में औसतन तीन बच्चों की मां बनती है तो भारत का फर्टिलिटी रेट 3 होगा।

पुणे के पहलवान की दंड बैठक मारते-मारते मौत, महज 30 साल की उम्र में आया हार्ट अटैक

30 वर्षीय पहलवान और महाराष्ट्र केसरी चैंपियन विक्रम पारखी की बुधवार को पुणे में जिम वर्कआउट के दौरान दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई। उन्हें आनन-फानन में अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज मिलने से पहले ही उनका निधन हो गया। विक्रम पारखी ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पदक जीते थे। नई दिल्लीः पुणे के एक युवा पहलवान की बुधवार को जिम में व्यायाम करते समय हार्ट अटैक का दौरा पड़ने से दुखद मृत्यु हो गई। मुलशी तालुका के मान में रहने वाले 30 वर्षीय विक्रम पारखी कथित तौर पर एक्सरसाइज में लगे हुए थे, जब उन्हें अचानक असुविधा का अनुभव होने लगा। पिंपरी-चिंचवड़ में चिकित्सा सुविधा मिलने से पहले ही विक्रम पारखी का निधन हो गया। प्रतिष्ठित पहलवान, पारखी ने कुमार महाराष्ट्र केसरी चैंपियनशिप जीतकर अपने तालुका का सम्मान बढ़ाया था। उनके प्रभावशाली करियर में महाराष्ट्र केसरी प्रतियोगिता और विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट में पदक शामिल थे। उनकी उपलब्धियों में अलग-अलग इवेंट्स में प्रतिष्ठित गदा जीतना भी शामिल है।

विराट-अनुष्का नहीं, धोनी संग साक्षी की जोड़ी भी है परफेक्ट, दिल छू जाएंगीं इनके रिश्ते की खट्टी-मीठी बातें

विराट कोहली और अनुष्का शर्मा की जोड़ी को तो लोग पसंद करते ही हैं लेकिन सबके चहेते कैप्टन रहे महेंद्र सिंह धोनी की साक्षी संग जोड़ी का भी जवाब नहीं हैं। जिनके रिश्ते की खट्टी-मीठी बातें दिल छू जाती हैं। जिन्हें देखते ही लगता है कि कपल हो तो धोनी-साक्षी की तरह।

भारत को वर्ल्ड चैंपियन बनाने वाले और कैप्टन कूल के नाम से मशहूर महेंद्र सिंह धोनी अपनी पर्सनल लाइफ में भी किसी चैंपियन से कम नहीं है। उनकी लव स्टोरी से लेकर मैरिड लाइफ तक दूसरे कपल्स को गोल्स देती है। लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करने वाला ये जोड़ा एक दशक से भी ज्यादा समय से एक-दूसरे के साथ है। लाइफ में कैसा भी मोड़ आए, धोनी-साक्षी मिलकर हर परेशानी का सॉल्यूशन निकाल लेते हैं।

खास बात तो ये कि धोनी और साक्षी का प्यार सिर्फ रोमांस से नहीं बल्कि प्यारी सी नोकझोंक से भी भरा है। लेकिन ये चीज कभी उनके बीच कड़वाहट पैदा नहीं कर पाती। इससे जुड़े कई दिलचस्प किस्से हैं जिनके बारे में दोनों ने ही कई बार बात की है। और जितनी भी बार इन्हें सुना या पढ़ा जाए, उतनी बार लगता है कि रिश्ता हो तो ऐसा।

रोमांस से ज्यादा खट्टी-मीठी नोकझोंक

कहते हैं लड़ाई से प्यार बढ़ता है धोनी और साक्षी पर ये लाइन बिल्कुल फिट बैठती है, क्योंकि साक्षी ने एक मीडिया इवेंट में बताया था कि 'शादी से पहले ज्यादा रोमांस नहीं था बल्कि हम खूब बात करते थे और एक-दूसरे को चिढ़ाते थे।' तभी तो अब भी ये रिश्ता खट्टी-मीठी नोकझोंक के साथ आगे बढ़ रहा है। क्योंकि रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए बात और साथ दोनों जरूरी है यानी एक-दूसरे को टाइम देना मजबूत रिश्ते की निशानी है।

आदमी की जिंदगी में मसाला लाती पत्नी लाइफ में पार्टनर की अहमियत बताते हुए माही ने बड़ी ही मजेदार बात कही थी कि 'मुझे लगता है कि एक आदमी की जिंदगी में पूरा मसाला पत्नी ही लाती है। वो हमारी लाइफ को आगे बढ़ाती हैं। आप चाहे टीम इंडिया के कप्तान हों या उप कप्तान उनके लिए ये मायने ही नहीं रखता। वो घर में आपकी एक निश्चित जगह तय करती हैं जबकि हैरान करने वाली बात ये है कि वो कहती हैं सब कुछ तुम्हारे हिसाब से ही तो चलता है।' शादी के इन अनुभवों को 'गो विद द फ्लो' अप्रोच के साथ अगर पति-पत्नी स्वीकार करते जाएं, तो उनके लिए शादीशुदा जिंदगी आसान बन जाती है और अलग-अलग व्यक्तित्व के कारण हो सकने वाले झगड़ों पर पहले ही विराम लगा सकती है। **कहां जाएगी...वो सिर्फ मेरी है** हर घर की कहानी में एक राग जरूर गाया जाता है कि 'शादी के बाद सब बदल जाता है'... ऐसा ही कुछ धोनी-साक्षी के रिश्ते में भी है। साक्षी का भी यही कहना है कि शादी हो जाती है तो सब बदल जाता है। ये लोग पहले आपका पीछा करते हैं और फिर शादी के बाद कहते हैं वो सिर्फ मेरी है, वो कहां जाएगी। साक्षी ने ये बात भले ही मजाक में कही हो, लेकिन ये इसका साफ सबूत देती है कि दोनों को ही अपने रिश्ते और पार्टनर पर कितना ज्यादा विश्वास है। वो इस रिलेशनशिप में खुद को कितना सुरक्षित और सहज महसूस करते हैं। ऐसा रिश्ता जब होता है, तो उसमें कभी भी असुरक्षा का भाव जन्म नहीं ले पाता और टॉक्सिक चीजें दूर बनी रहती हैं।

बच्चे का पढ़ाई में नहीं लग रहा मन, तो स्टडी टेबल पर रखें ये 5 पौधे, फिर देखना क्या होता है कमाल

क्या आप भी बच्चे की पढ़ाई को लेकर परेशान हैं कई कोशिशों के बाद भी बच्चे का पढ़ाई में मन नहीं लग रहा है तो घबराने की जरूरत नहीं। क्योंकि हम आपको एक ऐसी तरकीब बता रहे हैं जिससे न सिर्फ बच्चे का मन पढ़ाई में लगेगा बल्कि बच्चे का दिमाग भी दौड़ने लगेगा। इसके लिए आपको सिर्फ बच्चों की टेबल पर ये पौधे रखने होंगे।

बच्चों का पढ़ने में मन नहीं लग रहा है तो पौधे आपकी मदद कर सकते हैं जी हां, पौधे। जो सिर्फ घर की सजावट या ऑक्सीजन देने के काम नहीं आते बल्कि बच्चे का भविष्य भी बना सकते हैं। ये तो सभी समझते हैं कि आस-पास ग्रीनरी होने से पॉजिटिविटी रहती है घर का माहौल भी अच्छा रहता है। जिसके लिए इंडोर प्लांट्स का इस्तेमाल करते हैं लेकिन कुछ पौधे ऐसे भी होते हैं जिन्हें बच्चों की स्टडी टेबल पर रखना चाहिए। इससे बच्चों की पढ़ाई और सफलता में बहुत मदद मिल सकती हैं। क्योंकि इन पौधों की मदद से बच्चे का मन भटकेगा नहीं बच्चा सिर्फ पढ़ाई पर फोकस करेगा। ऐसे में आइए जानते हैं कि वो कौन से ऐसे खास पौधे हैं जो आपकी मदद कर सकते हैं। बच्चों की स्टडी टेबल पर पीस लिली का पौधा रखना सबसे अच्छा आइडिया है जैसा की नाम से ही पता चलता है ये पौधा मन को शांत रखने में मदद करता है। बता दें पीस लिली प्लांट लिली परिवार से ही है जो सफेद होता है सफेद रंग के कारण ही इसे पीस नाम दिया गया है। इस पौधे की खुशबु से बच्चे खुश भी रहते हैं। पीस लीली एयर प्यूरिफायर का भी काम करता है।

ऑर्किड का पौधा करता अट्रैक्ट साल में हर समय खिलने वाला ये पौधा दिखने में कलरफुल होता है। जो किसी को भी अपनी ओर अट्रैक्ट कर सकता है। घर में पॉजिटिव एनर्जी लाने का भी काम करता है। इस पौधे से मूड भी अच्छा होता है, ऐसे में यही कारण है कि स्टडी टेबल पर ऑर्किड का पौधा रखने से बच्चे का पूरा फोकस पढ़ाई पर कर सकते हैं।

बैम्बू प्लांट हो सकता है सबसे बेहतर बैम्बू प्लांट से एक खास तरह की फेंगशुई एनर्जी निकलती है जो इंसान के लिए बहुत अच्छी होती है इसलिए इसे स्टडी टेबल के कोने पर रखना ज्यादा बेहतर माना जाता है। बैम्बू प्लांट को खास एयर प्यूरीफायर के रूप में भी जाना जाता है इस पौधे से पॉजिटिव एनर्जी निकलती है जिसकी वजह से बच्चे का मन पढ़ने में लगता है। साथ ही इस पौधे को गुड लक के लिए भी लगाया जाता है।

कॉर्डलाइन फ्रुटिकोसा या 'लकी प्लांट'

गहरे लाल रंग के कॉर्डलाइन फ्रुटिकोसा को 'लकी प्लांट' भी कहते हैं। कुछ लोग इसे घर के बाहर लगाते हैं लेकिन कॉर्डलाइन फ्रुटिकोसा को स्टडी टेबल पर रखना सबसे अच्छा माना जाता है क्योंकि ये आस-पास की हवा को साफ करने का काम करता है। इस पौधे की वजह से शांत और पॉजिटिव माहौल रहता है। ऐसे में बच्चे का मन पढ़ाई में लगता है।

चमेली के पौधे का चमत्कार स्टडी टेबल पर चमेली का पौधा लगाने के बाद आपको चमत्कार देखने को मिल सकता है। क्योंकि चमेली के फूल की धीमी-धीमी खुशबू मन को सुकून पहुंचाती है इसलिए माना जाता है कि चमेली के फूल से मन शांत रहता है तनाव भी नहीं होता। जिसकी वजह से बच्चों का मन पढ़ाई में लगने लगता है।

बच्चे के शरीर में बेकाबू हो रही है डायबिटीज, इन लक्षणों से लग जाता है पता

डायबिटीज एक साइलेंट किलर है। अकेले भारत में ही डायबिटीज के 10 करोड़ से ज्यादा मरीज है। यह बीमारी धीरे-धीरे टीनएजर्स और 20 साल के युवाओं में आम होती जा रही है।

डायबिटीज लोगों के लिए जानलेवा बनती जा रही है। यह एक क्रॉनिक कंडीशन है, जो आजकल क्या बुजुर्ग क्या जवान सभी को प्रभावित कर रही है। टीनएजर्स और 20 साल के आसपास के युवा इस बीमारी की चपेट में ज्यादा आ रहे हैं। बता दें कि युवाओं में टाइप 1 और टाइप 2 डायबिटीज दोनों देखी जा रही हैं, लेकिन टाइप 2 डायबिटीज जिसे डायबिटीज मेलिटस कहते हैं के लक्षण दिखाई न देने के कारण इसका निदान देर में हो पाता है।

अमेरिका के रिसर्चर्स ने 2002 से 2017 तक के आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए भविष्यवाणी की है कि देश में टाइप 1 और टाइप 2 डायबिटीज वाले युवाओं की संख्या 2017 में 213,000 से बढ़कर 2060 में 239,000 हो जाएगी। अगर यहां बताए गए कुछ संकेतों पर जल्दी ध्यान दिया जाए, तो युवाओं में डायबिटीज को बढ़ने से रोका जा सकता है।

पेशाब और प्यास बढ़ना- अगर एक स्वस्थ व्यक्ति की पेशाब और प्यास में वृद्धि होने लगे, तो यह टाइप 1 और टाइप 2 डायबिटीज का संकेत है। अचानक से इन लक्षणों का अनुभव करने वाले युवा लोगों को ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है। क्योंकि यह लक्षण हाई ब्लड शुगर लेवल का भी संकेत दे सकता है।

अचानक से वजन घटना-

वजन बढ़ना तो सामान्य है, लेकिन नियमित भोजन के बाद भी आपका वजन लगातार कम हो रहा है, तो डायबिटीज का रिस्क है। इस दौरान डायबिटीज वालों का वजन उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़ता ऐसा होना टाइप 1 और टाइप 2 डायबिटीज वालों के लिए खतरे की घंटी है।

थकान- जरूरत से ज्यादा थकान होने का मतलब है कि आप डायबिटीज की गिरफ्त में हैं। इस स्थिति में हमारा शरीर ऊर्जा के लिए ग्लूकोज का पर्याप्त उपयोग नहीं कर पाता। जिससे थकान हो सकती है। इस लक्षण को पहचानकर जल्द ही डायबिटीज को मैनेज किया जा सकता है।

आंखों की रोशनी कमजोर होना-

दृष्टि में परिवर्तन हाई ब्लड शुगर लेवल से जोड़कर देखा जाता है। कम उम्र के लोगों के लिए जरूरी है कि वे अपनी दृष्टि में बदलाव के प्रति सचेत रहें और तुरंत टेस्ट कराएं। खासतौर से जिन लोगों के पहले से चश्मा लगा हुआ है, अगर विजन में कोई प्रॉब्लम हो, तो लक्षण को इग्नोर न करते हुए आई टेस्ट कराना चाहिए।

यहां बताए गए लक्षणों पर ध्यान देना जरूरी है। क्योंकि 200 से ज्यादा होने पर डायबिटीज होने की संभावना बढ़ जाती है। खासतौर से निदान के बाद इसे अनुपचारित छोड़ दिया जाए, तो टाइप 1 डायबिटीज वाले लोगों को डायबिटीज कीटोएसिडोसिस (DKA) होने का खतरा हो सकता है।

मधुमेह कीटोएसिडोसिस क्या है

टाइप 1 डायबिटीज वाले लोग अगर लक्षणों पर ध्यान देने से चूक जाएं, तो डायबिटीज कीटोएसिडोसिस का खतरा होता है। यह स्थिति तब होती है जब शरीर ऊर्जा के लिए ग्लूकोज का उपयोग बंद करके फैट को तोड़ना शुरू कर देता है, जिससे कीटोन का प्रोडक्शन शुरू हो जाता है। इससे शरीर के पीएच लेवल में खतरनाक रूप से असंतुलन पैदा होने लगता है।

डायबिटीज कीटोएसिडोसिस के लक्षण- मतली, उल्टी, पेट में दर्द और सांस में एक अजीब गंध डायबिटीज कीटोएसिडोसिस के मुख्य लक्षण हैं। इन लक्षणों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है, क्योंकि इसका तुरंत इलाज न किया जाए तो यह जीवन के लिए बड़ा खतरा है।

टाइप 1 और टाइप 2 डायबिटीज के बीच अंतर करने और डायबिटीज कीटोएसिडोसिस के विकास को रोकने के लिए समय पर इसकी पहचान करना बेहद जरूरी है। नियमित जांच की मदद से युवाओं में डायबिटीज को मैनेज करने में बहुत मदद मिल सकती है।

एक बार में साफ हो जाएगी स्कैल्प पर जमी सारी गंदगी, इन 4 तरीकों से बाल बन जाएंगे हेल्दी और मजबूत

अगर आप भी इस बदलते मौसम में उड़ती धूल-मिट्टी से परेशां हो गए हैं, लेकिन मार्किट के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल नहीं करना चाहते हैं, तो हमारे बताए इन 4 घरेलू नुस्खों को अपना सकते हैं। स्कैल्प की गंदगी से लेकर चिपचिपाहट तक, आपकी ज्यादातर हेयर प्रॉब्लम्स को ये उपाय दूर कर सकते हैं।

हम सभी चाहती हैं, कि हमारे बाल लंबे, घने और साफ हों। लेकिन धूल, मिट्टी, प्रदूषण के कारण स्कैल्प पर गंदगी जमा हो जाती है, जिससे बालों की जड़ें कमजोर, बाल रूखे और बेजान हो जाते हैं, जिससे डैंड्रफ जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि अच्छी हेयर हेल्थ के लिए स्कैल्प को भी हेल्दी रखना सबसे ज्यादा जरूरी होता है।

हम में से न जाने कितनी महिलाएं इस समस्या से परेशान होंगी और स्कैल्प क्लीनिंग के लिए केमिकल वाले प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करती होंगी। लेकिन बाजार से खरीदे गए ये प्रोडक्ट्स हमारे बालों को कमजोर और पतला बना सकते हैं। ऐसे में आप इस प्रॉब्लम को बस कुछ आसान तरीकों से दूर कर सकती हैं। आज हम आपको ऐसे ही 4 घरेलू नुस्खों के बारे में बताने वाले हैं, जिनकी मदद से आपकी स्कैल्प तो साफ होगी ही, साथ ही बालों में नई जान भी आएगी। (सभी फोटोः आईस्टॉक)

1. दही और बेसन की मदद से करें डीप क्लीन

1. दही और बेसन की मदद से करें डीप क्लीन

खाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला दही हमारे बालों के लिए भी फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद लैक्टिक एसिड स्कैल्प को गहराई से साफ करता है और डैंड्रफ कम करने में भी मदद करता है। साथ ही बेसन नेचुरल स्क्रब की तरह काम करता है, जो स्कैल्प से गंदगी और तेल को हटाने में भी फायदेमंद होता है। आइए जानते हैं, कैसे करें इन सामग्रियों का इस्तेमाल।

सबसे पहले एक कटोरी लें और इसमें 2 चम्मच बेसन और 4 चम्मच दही मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को स्कैल्प पर लगाकर 10 मिनट तक मसाज करें। समय पूरा होने के बाद बालों को धो लें। 2. एलोवेरा में मिलाएं नींबू का रस

कई घरों में आसानी से उपलब्ध होने वाला एलोवेरा स्किन के साथ-साथ बालों और स्कैल्प के लिए भी लाभदायक होता है। ये स्कैल्प को हाइड्रेट

करने, बालों को शाइन देने और मजबूत करने का काम करता है। साथ ही इस विधि में इस्तेमाल किया जाना वाला नींबू का रस स्कैल्प को साफ करने, डैंड्रफ को दूर करने में सहायक होता है। ऐसे करें इस विधि को तैयार- 2 चम्मच एलोवेरा जेल और 1 चम्मच नींबू के रस को एक छोटी कटोरी में डालकर मिक्स कर दें।

जब पेस्ट तैयार हो जाए तो इसे स्कैल्प पर लगाकर 15 मिनट तक रहने दें। 15 मिनट बात नार्मल पानी से अपने बालों को धो लें।

3. दही और एलोवेरा करेगा कमाल

दही और एलोवेरा दोनों ही बालों से गंदगी को साफ करने के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। आप घर पर बने इस हेयर मास्क का इस्तेमाल हफ्ते में दो बार कर सकती हैं। इसे बनाना बहुत ही आसान है और इसमें आपके ज्यादा पैसे भी खर्च नहीं होंगे। तो आइए जानते हैं, कैसे बनाएं ये हेयर मास्क।

एक बाउल में 2 चम्मच दही में 2 चम्मच एलोवेरा जेल मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें।

अब इस पेस्ट को स्कैल्प सहित अपने बालों पर भी लगाएं और 15-20 मिनट तक रखें। जब समय पूरा हो जाए तो नॉर्मल पानी से सिर धो लें।

4. सरसों के तेल में मिक्स करें ये दो चीज

4. सरसों के तेल में मिक्स करें ये दो चीज

पुराने जमाने से ही सरसों के तेल को बालों के लिए फायदेमंद माना जाता है। ये हमारे बालों को मजबूती तो देता ही है, साथ ही नरिशिंग और शाइनी भी बनाता है। सरसों के तेल में इस्तेमाल की जाने वाली दो अन्य सामग्री, दही और नींबू है, जो डैंड्रफ की समस्या से दूर करने और बालों को वॉल्यूम देने में फायदेमंद होते हैं। तो आइए जानते हैं फायदों से भरपूर इस हेयर मास्क को कैसे बनाया जाता है। सबसे पहले के कटोरी लें और इसमें 2 चम्मच दही, 2 सरसों का तेल और 1 चम्मच नींबू का रस मिक्स कर दें। जब ये सभी चीजें अच्छे से मिक्स हो जाए तो इन्हें स्कैल्प और बालों पर सही से लगा लें 20 मिनट तक इसे ऐसे ही रहने दें और फिर हेयर वॉश कर लें।

8 चौके और 11 छक्के... अभिषेक शर्मा ने 28 बॉल में जड़ा तूफानी शतक, भारत के लिए T20 में ठोकी जॉइंट फास्टेस्ट सेंचुरी

भारतीय क्रिकेटर अभिषेक शर्मा ने मेघालय के खिलाफ धमाकेदार पारी खेली। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में उन्होंने मात्र 28 गेंदों में शतक जड़ दिया। अभिषेक ने 29 गेंदों में 106 रन बनाए, जिसमें 8 चौके और 11 छक्के शामिल थे। पंजाब ने 143 रनों का लक्ष्य 9.3 ओवर में ही हासिल कर लिया।

नई दिल्ली: हाल ही में त्रिपुरा के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में गुजरात के विकेटकीपर बल्लेबाज उर्विल पटेल ने 28 गेंदों पर शतक जड़कर सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। वह भारत की तरफ से टी20 में सबसे तेज सेंचुरी लगाने वाले बल्लेबाज बन गए थे। लेकिन अब उनके साथ भारत के लिए टी20 खेलने वाले युवा विस्फोटक बल्लेबाज अभिषेक शर्मा का भी नाम जुड़ गया है। अभिषेक ने भी 28 गेंदों में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में सेंचुरी लगा दी है। वह संयुक्त रूप से भारत के लिए टी20 में सबसे तेज सेंचुरी लगाने वाले खिलाड़ी बन गए हैं। इसके अलावा पूरी दुनिया में टी20 में सबसे तेज शतक लगाने वाले उर्विल पटेल के साथ दूसरे खिलाड़ी भी अभिषेक शर्मा बन गए हैं। टी20 में सबसे तेज सेंचुरी का रिकॉर्ड एस्टोनिया के साहिल चौहान के नाम है, उन्होंने 27 गेंदों में सेंचुरी लगाई थी। **मेघाल्य के खिलाफ जमकर बोला अभिषेक शर्मा का बल्ला** मेघाल्य के खिलाफ पारी का आगाज करने उतरे पंजाब के कप्तान अभिषेक शर्मा ने गेंदबाजों की धज्जियां उड़ा दी। उन्होंने कुल 29 बॉल का सामना कर 365.52 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए नाबाद 106 रन बनाए। अभिषेक ने अपनी पारी में 8 चौके और 11 छक्के उड़ाए। 143 रन के टारगेट का पीछा पंजाब ने सिर्फ 9.3 ओवर में ही कर लिया और 7 विकेट से मैच जीत गई। अभिषेक लगातार अपनी तूफानी बैटिंग से सबको इम्प्रेस कर रहे हैं।

मेघाल्य ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था। ऐसे में उन्होंने 7 विकेट पर 142 रन बनाए। पंजाब के लिए सबसे ज्यादा 2-2 विकेट कप्तान अभिषेक शर्मा और रमनदीप सिंह ने लिए। वहीं अश्विनी कुमार, हरप्रीत बरार और सोहराब धालीवाल ने 1-1 विकेट लिया।

अभिषेक शर्मा का करियर 24 साल के अभिषेक शर्मा ने अब तक भारतीय क्रिकेट टीम के लिए 12 टी20 खेले हैं, जिसमें उन्होंने 171 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 256 रन बनाए। उनके बल्ले से टी20 इंटरनेशन में एक शतक और एक अर्धशतक देखने को मिला है। इसके अलावा आईपीएल में अभिषेक ने 155.7 के स्ट्राइक रेट से 1377 रन बनाए हैं। उनके नाम आईपीएल में 7 अर्धशतक भी हैं।

T20 इतिहास का सबसे बड़ा टोटल... 120 गेंदों में 349 रन बनाकर बड़ौदा ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

बड़ौदा ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में सिक्किम के खिलाफ टी20 क्रिकेट का नया विश्व रिकॉर्ड बना दिया है। उन्होंने 5 विकेट पर 349 रन का विशाल स्कोर खड़ा कर दिया है। भानु पनिया ने 51 गेंदों में 134 रनों की नाबाद पारी खेली, जिसमें 15 छक्के और 5 चौके शामिल थे।

नई दिल्लीः बड़ौदा क्रिकेट टीम ने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में इतिहास रच दिया। उन्होंने गुरुवार को इंदौर में टी20 क्रिकेट का अब तक का सबसे बड़ा टोटल बना दिया। बड़ौदा ने सिक्किम के खिलाफ 5 विकेट पर 349 रन बनाकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बना दिया है। यह टी20 क्रिकेट के इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर बन गया है। आज से पहले किसी टीम ने इतने रन टी20 में नहीं बनाए हैं। इससे पहले सबसे ज्यादा रन बनाने का रिकॉर्ड जिम्बाब्वे के खिलाफ था। उन्होंने इसी साल गांबिया के खिलाफ 20 ओवर में 344 रन बनाए थे। **भानू पनिया ने ठोका दमदार शतक** 349 रन बनाने के दौरान बड़ौदा के लिए सबसे तूफानी बैटिंग तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरे भानू पनिया ने की। इस खिलाड़ी ने 262.75 के स्ट्राइक रेट से बल्लेबाजी करते हुए 51 गेंद में नाबाद 134 रन बना डाले। उन्होंने अपनी पारी में 15 छक्के और 5 चौके लगाए। इसके अलावा ओपनर्स शाश्वत रावत (43 रन) और अभिमन्यू सिंह राजपूत (53 रन) ने टीम को अच्छी शुरुआत दी। शिवालिक शर्मा ने भी 55 तो विश्णु सोलांकी ने भी 16 गेंद में तूफानी अर्धशतक ठोका। इन बल्लेबाजों के बूते बड़ौदा ने वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। सिक्किम के खिलाफ इस पारी में बड़ौदा ने कुल 37 छक्के लगाए। बता दें कि बड़ौदा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया था। बता दें कि क्रुणाल पंड्या इस मैच में बड़ौदा की कप्तानी कर रहे हैं जबकि उनके भाई हार्दिक पंड्या इस मैच का हिस्सा नहीं हैं। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में पिछला सबसे बड़ा टीम स्कोर पंजाब का था, जिसने टूर्नामेंट के आखिरी संस्करण में आंध्र के खिलाफ 275 रन बनाए थे।

वैक्सीन नहीं कोविड से खुरदुरी हुई धमनियां बन रही हार्ट अटैक की वजह, लखनऊ PGI में बोले एक्सपर्ट

लखनऊ में आयोजित कार्डियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया के सम्मेलन में विशेषज्ञों ने बताया कि कोविड संक्रमण के बाद धमनियों में खुरदुरापन और सूजन के कारण युवाओं में हार्ट अटैक के मामले बढ़ रहे हैं। यह अचानक मौतों का एक प्रमुख कारण बन रहा है। विशेषज्ञों ने कोविड वैक्सीन को हार्ट अटैक से जोड़ने वाली बातों को खारिज किया।

रणविजय सिंह, लखनऊः एक सामान्य व्यक्ति की धमनियां काफी स्मूद होती हैं, लेकिन कोविड संक्रमण की चपेट में आने वाले की धमनियों में खुरदुरापन होने के साथ ही सूजन पाई जा रही है। इन्हीं कारणों से क्लॉटिंग की समस्या आ रही है। पीजीआई में बुधवार को हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस में विशेषज्ञों ने यह जानकारी दी। कार्डियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया की स्टडी के मुताबिक हार्ट अटैक के चलते अचानक होने वाली मौतों के पीछे यह एक बड़ी वजह है। उनका दावा है कि अचानक हार्ट अटैक पड़ने से जिनकी मौतें हुईं हैं, उनमें 30 से 40 वर्ष की आयु वाले ज्यादातर वे लोग थे जो कोविड की चपेट में आए थे। संगठन के 76वां वार्षिक सम्मेलन को लेकर पीजीआई में बुधवार को हुई प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान विशेषज्ञों ने यह जानकारी देते हुए कोविड वैक्सीन से हार्ट अटैक की बात को सिरे से खारिज कर दिया। कार्डियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया के यूपी चैप्टर और पीजीआई के संयुक्त तत्वावधान में 76वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन 5 से 8 दिसंबर तक इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में होगा। आयोजन की जानकारी देते हुए पीजीआई के प्रो. सत्येंद्र तिवारी ने बताया कि इसमें देश-विदेश के करीब तीन हजार डेलीगेट्स हिस्सा लेंगे।

पीजीआई कार्डियोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आदित्य कपूर के मुताबिक अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी और यूरोपियन सोसायटी ऑफ कॉर्डियोलॉजी के पदाधिकारियों के अलावा अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, इटली, ब्रिटेन, स्पेन और नेपाल समेत कई यूरोपिय देशों से कार्डियोलॉजिस्ट इसमें शामिल होंगे। प्रो. अंकित साहू के मुताबिक सम्मेलन को स्टेट मेडिकल काउंसिल की तरफ से अप्रूवल मिल चुका है। लिहाजा शामिल होने वाले डेलीगेट्स को नौ पॉइंट्स मिलेंगे।

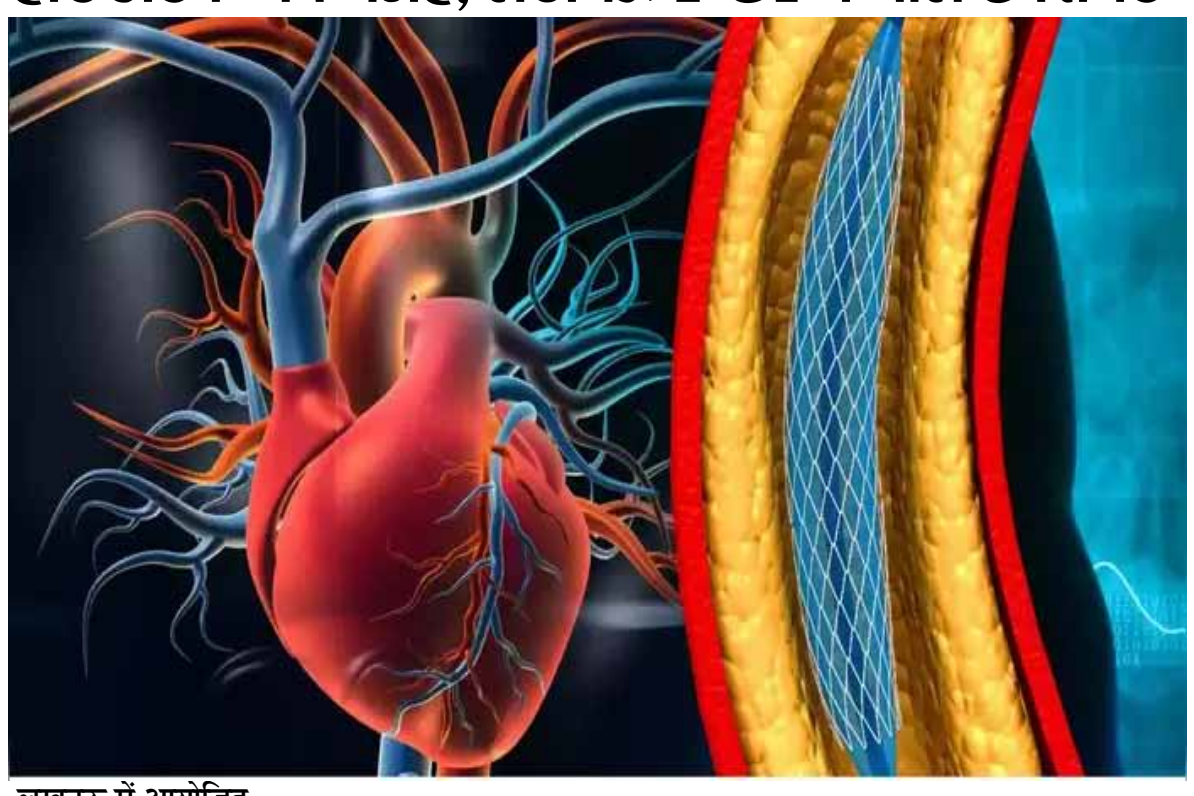

30 साल बाद लखनऊ में आयोजन सम्मेलन के मुख्य आयोजक प्रो. सत्येंद्र तिवारी के मुताबिक साल 1995 के बाद अब लखनऊ में सम्मेलन हो रहा है। इसके पीछे लखनऊ में हुए विकास को बड़ी वजह बताया। पीजीआई कार्डियोलॉजी विभाग के अध्यक्ष प्रो. आदित्य कपूर के मुताबिक एयरपोर्ट से लेकर होटल और ट्रांसपोर्टेशन के क्षेत्र में हुए विकास को देखते हुए लखनऊ में आयोजन को मंजूरी मिली है।

एक लाख की आबादी पर एक कार्डियोलॉजिस्ट कार्डियोलॉजिस्ट की कमी के मुद्दे पर प्रो. अवधेश ने बताया कि दस हजार की आबादी पर एक कार्डियोलॉजिस्ट होना चाहिए, जबकि इस समय एक लाख की आबादी पर एक है। साथ ही बताया गया कि सम्मेलन में रक्षामंत्री राजनाथ सिंह भी शामिल होंगे।

शिखर धवन के इंटरनेशनल क्रिकेट में 5 महारिकॉर्ड

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन आज अपना 39वां जन्मदिन मना रहे हैं। इस खास मौके पर आज हम आपको बताने जा रहे हैं उनके द्वारा इंटरनेशनल क्रिकेट में बनाए गए 5 बड़े रिकॉर्ड।

नई दिल्ली: गब्बर के नाम से मशहूर शिखर धवन का आज यानी 5 दिसंबर को जन्मदिन होता है। धवन अब 39 साल के हो गए हैं। बता दें कि उन्होंने 2024 में ही इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास का ऐलान किया था। उसके बाद से वह लगातार अन्य-अन्य लीग में खेल रहे हैं। हालांकि उनके जन्मदिन के खास मौके पर आज हम आपको बताने जा रहे हैं इंटरनेशनल क्रिकेट में उनके द्वारा बनाए गए 5 बड़े रिकॉर्ड्स के बारे में। **टेस्ट डेब्यू में सबसे तेज शतक** टेस्ट डेब्यू में सबसे तेज शतक 39 साल के शिखर धवन ने 2013 में घर पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था। वो मैच मोहाली में खेला गया था। गब्बर ने अपने डेब्यू टेस्ट पर ही सेंचुरी लगा दी थी। उन्होंने सिर्फ 85 बॉल में शतक ठोका था। इसी के साथ वह डेब्यू टेस्ट पर सबसे तेज शतक लगाने वाले खिलाड़ी भी बन गए। **100वें वनडे में सेंचुरी लगाने वाले पहले भारतीय गब्बर** शिखर धवन करियर के 100वें वनडे मैच में शतक लगाने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी हैं। उन्होंने यह कारनामा साउथ अफ्रीका के खिलाफ 2018 में किया था। वो धवन के करियर की 13वीं सेंचुरी भी थी। **वनडे में शिखर धवन के नाम एक खास रिकॉर्ज** वनडे क्रिकेट में शिखर धवन ने रनों का अंबार लगाया है। इसी के साथ उनके नाम एक बड़ा रिकॉर्ड भी है। वह भारतीय टीम के लिए एकदिवसीय प्रारूप में सबसे तेज 2000 और 3000 रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं।

टी20 में भी गब्बर के नाम एक खास कीर्तिमान शिखर धवन टी20 में भारत के लिए एक कैलेंडर ईयर में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी हैं। उन्होंने 689 रन बनाए थे।

डेब्यू टेस्ट पर सबसे तेज पारी का रिकॉर्ड शिखर धवन ने डेब्यू टेस्ट पर सबसे तेज शतक का रिकॉर्ड तो बनाया ही था। उसके अलावा उन्होंने सबसे तेज पारी का रिकॉर्ड भी बनाया था। गब्बर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मोहाली टेस्ट में 174 गेंद में 187 रन बनाए थे, जिसमें 33 चौके और 2 छक्के शामिल थे।

भारतीय महिला टीम पहला वनडे 5 विकेट से हारी:ऑस्ट्रेलिया ने 101 रन का टारगेट 16.2 ओवर में चेज किया; मेगन शट को 5 विकेट

ब्रिस्बेन भारतीय महिला टीम ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले वनडे मैच 5 विकेट से हार गई है। गुरुवार को ऑस्ट्रेलियाई टीम ने 16.2 ओवर में 5 विकेट पर 101 रन का टारगेट चेज कर लिया। ब्रिस्बेन के मैदान पर भारतीय कप्तान टॉस जीतकर बल्लेबाजी करने का फैसला किया, जो गलत साबित हुआ। भारत 34.2 ओवर में 5 विकेट पर 100 रन पर ऑलआउट हो गई। जवाबी पारी में ऑस्ट्रेलिया की ओपनर जॉर्जिया वोल ने नाबाद 46 रन की पारी खेली, जबकि फोएबे लिचफील्ड ने 35 रन बनाए। भारत की ओर से जेमिमा रोड्रिगेज ने सबसे ज्यादा 23 रन बनाए। हरलीन देअल ने 19 और कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 17 रन बना सकीं। जबकि तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ने 5 विकेट झटके। वहीं, ऑस्ट्रेलिया की ओर से मेगन शट ने 5 विकेट झटके। किम गैरथ, एश्ले गार्डनर, एनाबेल सदरलैंड और एलेना किंग को एक-एक विकेट मिले।

तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर ने 3 विकेट झटके। वोल-लिचफील्ड ने 48 रन की ओपनिंग पार्टनरशिप की 101 रन का टारगेट चेज कर रही ऑस्ट्रेलियाई टीम ने मजबूत शुरुआत की। टीम की ओपनर जॉर्जिया वोल और फोएबे लिचफील्ड ने 41 बॉल पर 48 रन की पार्टनरशिप की। वोल ने सदरलैंड के साथ 25 और गार्डनर के साथ 20 रनों की अहम साझेदारी भी की। **भारत ने आखिरी 5 विकेट 11 रन बनाने में गंवाए** 89 रन के स्कोर पर भारतीय टीम का 5वां विकेट गिरा। यहां जेमिमा रॉड्रिगेज 23 रन बनाकर आउट हुईं। उन्हें किम गैरथ ने बोल्ड कर दिया। जेमिमा के आउट होते ही भारतीय पारी बिखर गई। टीम ने आखिरी 5 विकेट 11 रन बनाने में गंवा दिए। जेमिमा रॉड्रिगेज ने भारतीय पारी में सबसे ज्यादा 23 रन बनाए। टीम इंडिया की खराब शुरुआत

भारतीय टीम की शुरुआत खराब रही है। टीम ने 42 रन के स्कोर पर 4 विकेट गंवा दिए हैं। टीम की टॉप-3 बैटर्स ने मिलकर 30 रन ही बनाए हैं। ओपनर प्रिया पुनिया 3 और स्मृति मंधाना 8 रन बनाकर आउट हुईं। वहीं, हरलीन देअल ने 19 रन बनाकर आउट हुईं। **भारत ने टॉस जीतकर बैटिंग चुनी, साधू डेब्यू कर रहीं** भारतीय टीम ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला लिया है। कप्तान हरमनप्रीत कौर तितास साधू को डेब्यू करने का मौका दिया है।

भारतीय कप्तान हरमनप्रीत ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला लिया।

दोनों टीमें भारत XI: हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, प्रिया पुनिया, हरलीन देअल, स्मृति मंधाना, रिचा घोष (विकेटकीपर), दीप्ति शर्मा, तितास साधू, प्रिया मिश्रा, साइमा ठाकोर और रेणुका ठाकुर।

ऑस्ट्रेलिया- XI: तहलिया मैकग्रा (कप्तान), फोएबे लिचफील्ड, जॉर्जिया वोल, एलीस पेरी, बेथ मूनी (विकेटकीपर) , एनाबेल सदरलैंड, ऐश गार्डनर, जार्जिया वेयरहम, एलाना किंग, किंग गर्थ, मेगन शट।

13 साल के वैभव सूर्यवंशी ने 6 छक्के ठोके, धोनी स्टाइल में फिनिश, IPL में 1.10 करोड़ में बिके थे

Vaibhav Suryavanshi और आयुष म्हात्रे के अर्धशतक से यूएई को हराकर भारत अंडर-19 एशिया कप के सेमीफाइनल में पहुंच गया। वैभव सूर्यवंशी ने हाल में आईपीएल नीलामी में सुर्खियां बटोरी थी जब राजस्थान रॉयल्स ने उन्हें एक करोड़ 10 लाख रुपये में खरीदा। वह लीग के इतिहास में नीलामी में उतरने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने।

शारजाहः इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के लिए बीते हफ्ते हुए मेगा ऑक्शन में 13 साल के वैभव सूर्यवंशी ने जमकर सुर्खियां बटोरी थी। राजस्थान रॉयल्स ने एक करोड़ 10 लाख रुपये में खरीदकर उन्हें आईपील नीलामी में बिकने वाला सबसे युवा खिलाड़ी बनाया था। अब इस उभरते सुपर स्टार ने अंडर-19 एशिया कप में भारत के लिए मैच विनिंग फिफ्टी ठोकी है। **वैभव की 46 गेंद में 76 रन की तूफानी पारी** भारत ने बुधवार को ग्रुप ए में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 10 विकेट से रौंदकर अंडर-19 एशिया कप वनडे टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए यूएई की पूरी टीम 44 ओवर में सिर्फ 137 रन पर सिमट गई। भारत ने इसके जवाब में वैभव सूर्यवंशी (46 गेंद में नाबाद 76) और आयुष म्हात्रे (51 गेंद में नाबाद 67) के बीच पहले विकेट की अटूट शतकीय साझेदारी की मदद से 16.1 ओवर में बिना विकेट खोए 143 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की। छह छक्के और धोनी स्टाइल में फिनिश

बाएं हाथ के बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने अपनी पारी में तीन चौके और छह छक्के मारे। 165.21 की शानदार स्ट्राइक रेट से उन्होंने तेजी से रन बनाए। बिहार के समस्तीपुर जिले के रहने वाले वैभव इससे पहले पाकिस्तान के खिलाफ नौ गेंद में एक रन और नेपाल के खिलाफ 23 गेंद में 23 रन बनाए थे जबकि आयुष म्हात्रे ने चार छक्के और इतने ही चौके जड़े। वैभव ने विनिंग छक्का मारकर धोनी के स्टाइल में भारत के लिए मैच फिनिश किया। **ऐसे सेमीफाइनल में पहुंचा भारत** दाएं हाथ के तेज गेंदबाज युद्धजीत गुहा भारत के सबसे सफल गेंदबाज रहे जिन्होंने 15 रन देकर तीन विकेट चटकाए। चेतन शर्मा (27 रन पर दो विकेट) और ऑलराउंडर हार्दिक राज (28 रन पर दो विकेट) ने दो-दो विकेट हासिल किए। भारत ने टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के खिलाफ ग्रुप के पहले मैच में 43 रन की निराशाजनक हार के साथ की थी, लेकिन फिर जापान की कमजोर टीम को 211 रन से हराया था। भारत सेमीफाइनल में ग्रुप बी में शीर्ष पर रहे श्रीलंका से भिड़ेगा जबकि ग्रुप ए में शीर्ष पर रहा पाकिस्तान शुक्रवार को बांग्लादेश से खेलेगा। पाकिस्तान और श्रीलंका दोनों ग्रुप चरण में अजेय रहे।

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक अन्नपूर्णा गुप्ता द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस प्लॉट नं 0535 एवं 1272 खलकुटवा टाटू रोड पुलिस स्टेशन रांची में विजय जनरल स्टोर किनू चौक रांची 834002 से प्रकाशित
प्रधान संपादक अन्नपूर्णा गुप्ता कार्यालय फ़ोन नं .651-2253830 ,9471717919, 9123244805 RNI NO JHAHIN / 2013/66670